।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।। संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन। राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।

पाक्षिक
पाथेय कण

श्रावण कृ.७ युगाब्द ५११९, वि.२०७४

१६ जुलाई २०१७

वर्ष ३३ : अंक ८

अपनी बात

परम सुहृद पाठक–गण,

सप्रेम नमस्कार।

पाथेय कण को आपके पत्र लगातार प्राप्त हो रहे हैं। हमारा आपसे अनुरोध है कि पत्र लिखने के अभ्यास को कम न करें। आपके पत्रों से ही हमें अंक में सुधार करने का अवसर मिलता है।

यह अंक आपको कैसा लगा यह हमें अवश्य बतायें। ई–मेल से प्रतिक्रिया भेजना अत्यंत सरल है। इस माध्यम से आपकी प्रतिक्रिया हमें शीघ्र ही मिल जाती है। प्रतिक्रिया भेजते समय अपना नाम व पता अवश्य लिखें।

आपकी सटीक प्रतिक्रिया ही हमारा सम्बल है। इसी आशा के साथ।

जय श्रीराम।

आपका

सम्पादक

सहयोग राशि

एक वर्ष	₹ 100/–
पन्द्रह वर्ष	₹ 1000/–

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर–302017 (राज.)
सम्पर्क : 9414447123, 9929722111
0141–2529334
Website: www.Patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

एकता और अखण्डता को खुली चुनौती

गत ३ जुलाई को हैदराबाद में मुस्लिमों की एक सभा को सम्बोधित करते हुए तेलंगाना के एक विधायक श्री अकबरुद्दीन ओवेसी ने देश और हिन्दू समाज के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणियाँ कीं। उन्होंने कहा कि ''हम खुदा के बन्दे यदि निकल पड़े तो तुम हिन्दू भाग खड़े होंगे।''और भी अनेक उत्तेजित करने वाली बातें उन्होंने कहीं। उनका यह भाषण दिन भर दूरदर्शन चैनलों की सुर्खियाँ बना रहा। तीन साल पहले भी उन्होंने ऐसा ही एक भाषण दिया था।

अकबरुद्दीन ओवेसी तेलंगाना की **मजलिसे इत्तेहादुल मुस्लिमीन** (एम आई एम) के विधायक हैं। इनके अग्रज जनाब असदुद्दीन ओवेसी सांसद हैं और पूरा देश उनके कारनामों और विवादित बयानों से परिचित है। असदुद्दीन ओवेसी ही मजलिस के अध्यक्ष भी हैं। इस एम.आई.एम का इतिहास नब्बे वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ था। हैदराबाद के निजाम के कहने पर नवाब मोहम्मद नवाज खान ने १९२७ में मजलिसे इत्तेहादुल मुस्लिमीन'शुरु की थी। १९३८ में जिन्ना के नजदीकी नवाब बहादुर यार जंग इसके मुखिया बने। **नवाब यार जंग जिन्ना की मुस्लिम लीग के कोषाध्यक्ष भी थे।** इन्हीं दिनों एक वकील कासिम रिजवी इस पार्टी में आया और निजाम का खास बन गया।

इसी कासिम रिजवी ने रजाकारों की डेढ़ लाख की सेना बनाई और हैदराबाद रियासत के हिन्दुओं पर भीषण अत्याचार किये। एम.आई.एम. के तत्कालीन मुखिया कासिम रिजवी ने हैदराबाद को पाकिस्तान में मिलाने का षड़यंत्र भी किया। बाद में जब भारतीय सेना ने हैदराबाद में प्रवेश किया तो सारे रजाकारों ने हथियार डाल दिये। कासिम रिजवी को गिरफ्तार कर जेल में बन्द कर दिया गया तथा मजलिस को गैर-कानूनी घोषित कर दिया गया। वर्ष १९५७ में कासिम को छोड़ दिया गया और वह पाकिस्तान में बस गया। इसी के साथ केन्द्र सरकार ने मजलिस से प्रतिबन्ध भी हटा लिया।

ओवेसी भाइयों के दादा अब्दुल वाहिद ओवेसी को राष्ट्रद्रोह के अपराध में जेल हुई। इनके पिता सलाउद्दीन ओवेसी पर भी कई बार साम्प्रदायिकता भड़काने के आरोप लगे। अब्दुल वाहिद ओवेसी के बाद सलाउद्दीन मजलिस के अध्यक्ष बने और १९८४ में मुस्लिम बहुल हैदराबाद से सांसद बने। २००४ तक वे ही संसद का चुनाव जीतते रहे। इसके बाद से उनके पुत्र जनाब असदुद्दीन ओवेसी हैदराबाद लोक सभा क्षेत्र से सांसद बन रहे हैं।

स्पष्ट है कि पाकिस्तान समर्थकों ने ही मजलिसे इ. मुस्लिमीन पार्टी बनाई थी। आज भी यह दल १७ सितम्बर को शोक-दिवस के रूप में मनाता है क्योंकि इसी दिन सैनिक कार्रवाई के बाद हैदराबाद का भारत में विलय हुआ। इसलिये इस पार्टी की भारत के प्रति निष्ठा पर प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है। अकबरुद्दीन और असदुद्दीन ओवेसी के वक्तव्य इसीलिये देश की एकता और अखण्डता को चुनौती देने वाले होते हैं।

इस देश में स्वतंत्रता के बाद से ही सेकुलरवाद का जो कोहरा छाया रहा उसी का परिणाम है कि अकबरुद्दीन जैसे लोग खुले आम खुदा के बन्दों के निकल पड़ने और हिन्दुओं के भाग खड़े होने के बयान दे रहे हैं।

मिताशी मितभाषी च, मितशायी मितव्ययी।
नैरोग्यं च श्रियं चापि, सममेवानुकूलयेत्।।

कम खाने वाला, कम बोलने वाला, कम सोने वाला एवं कम खर्च करने वाला व्यक्ति सदैव उत्तम स्वास्थ्य, सुख और समृद्धि को प्राप्त करता है। – *सूक्तिसुधा*

ऐसे थे अपने दीनदयाल जी

कबड्डी में उनकी फुर्ती देखने लायक थी

दीनदयाल जी एक अच्छे मित्र और होनहार छात्र थे। वह संस्कृत के विद्यार्थी थे, साहित्य में उनकी गहरी अभिरुचि थी। मित्रों के बीच वह बड़े प्रेम से घुल मिल जाते थे और लोगों के दिल में अपनी सादगी और सदाशयता के नाते अपना स्थान बना लेते थे। यों बाह्य रूप से उनका व्यक्तित्व कोई बहुत आकर्षक या प्रभावशाली न था। कपड़े आदि वह बहुत साधारण कोटि के पहनते थे– मामूली सा कुर्ता और साधारण सी धोती। लेकिन उनके पास अपार साहस था। शिव जैसी संकल्पशक्ति थी, अजेय आत्मबल था। गजब की हिम्मत थी। इन सबके साथ ही वह अत्यधिक मृदु स्वभाव के अल्पभाषी एवं मृदुभाषी, गंभीर और उदार व्यक्ति थे।

अधिकांश समय उनका अध्ययन मनन एवं चिंतन में ही बीतता था। लेकिन जब कभी खेलकूद में भाग लेते तो उसी में खो जाते। मुझे अच्छी तरह स्मरण है, कबड्डी में चार–पांच खिलाड़ी उन्हें पकड़ नहीं पाते थे। तब मन में एक प्रश्न उठता था– 'इस दुबले–पतले व्यक्ति में इतनी ताकत कहां से आयी?' यह आत्मबल था– आत्म विश्वास की देन– जिसने आगे चलकर उन्हें महान बनाया।

भाषण करने या किसी भी विषय को समझाने की उनकी अपनी शैली थी। अपनी बात को वह बड़े प्रेम से धीरे–धीरे समझाते थे। भाषण के लिए भाषण उन्हें पसन्द नहीं था। वह मैत्रीपूर्ण वार्ताअधिक पसंद करते थे। इसीलिए श्रोताओं के मन में उनकी और अधिक बातें सुनने की प्यास बनी रहती थी।

जब वह अध्ययन करने बैठते थे तो पुस्तकों की दुनिया में खो जाते थे। उन्हें सर्दी बहुत महसूस होती थी। इसलिए कभी–कभी वह अपने चारों तरफ रजाई का घेरा बना लेते थे और अंदर लालटेन रखकर पढ़ने लगते थे। उनके आस–पास के लोग यह दृश्य देखकर हँसने लगते थे।

सच कहूँ तो दीनदयाल जी जैसा कर्मयोगी, त्यागी एवं साहसी मैंने अपने जीवन में दूसरा नहीं देखा।

– डॉ.कृष्णबहादुर, *इलाहाबाद*

अपने देश और संस्कृति को हम कितना जानते हैं

यहाँ अपने देश के इतिहास, भूगोल तथा संस्कृति सम्बन्धी दस प्रश्न दिये गये हैं। इनका उत्तर दें और परीक्षा करें कि अपने देश के संबंध में आप कितना जानते हैं?

१. अपनी संस्कृति में सात महानायक अमर माने गये हैं जिनमें से तीन रामायण काल के है। एक हनुमान और दूसरे परशुराम हैं, तीसरे कौन हैं?
२. महाभारत काल का वह योद्धा कौन था जो जन्म के समय स्त्री था और जिसने एक यक्ष की कृपा से पुरुषत्व प्राप्त किया?
३. अमरीका महाद्वीप के किस देश में एक विशालकाय शिव मन्दिर के भग्नावशेष आज भी हैं? यह मन्दिर मदुरा के मीनाक्षी मन्दिर जैसा ही है।
४. वर्तमान में बांग्लादेश में कितने शक्तिपीठ स्थित हैं?
५. ऋषिपुत्र नचिकेता की यमराज के पास जाने की कथा किस उपनिषद् में हैं?
६. कश्मीर के महाराजा संग्राम राज ने किस मुस्लिम आक्रमणकारी को दो–दो बार हराया था?
७. तीन सौ साल पहले भारत के गाँव–गाँव में कौन सी धातु बनाने के कुटीर–उद्योग थे?
८. फाँसी पर चढ़े चाफेकर बन्धुओं की माता को सांत्वना देने कोलकाता से पूना कौन आईं थीं?
९. अलाउद्दीन खिलजी की दुर्गति करने वाले जालौर के चौहान राजा कौन थे?
१०. तमिलनाडु के किस महान् संगीतकार के जन्म का २५० वाँ वर्ष इस साल मनाया जा रहा है?

(उत्तर इसी अंक में है)

पंचांग– श्रावण (शुक्ल पक्ष)

युगाब्द–५११९, विक्रमी–२०७४, शाके–१९३९

(२४ जुलाई से ७ अगस्त २०१७ तक)

सिंजारा (तीज का)–२५ जुलाई, **चतुर्थी व्रत**– २६ जुलाई, **श्रीकल्याण जी महाराज (डिग्गी) की पदयात्रा प्रारम्भ**–२९ जुलाई, **एकादशी व्रत**– ३ अगस्त, **प्रदोष व्रत**– ५ अगस्त, **श्रावणी पूर्णिमा(रक्षाबंधन)**– ७ अगस्त **(चन्द्रग्रहण)**

चन्द्रमा : २४–२५ जुलाई को स्वराशि **कर्क** में, २६–२७ **सिंह** , २८–२९ **कन्या**, ३०–३१ जुलाई व १ अगस्त **तुला** में २–३ अगस्त नीच की राशि **वृश्चिक** में, ४ से ६ अगस्त **धनु** तथा ७ अगस्त को **मकर** राशि में गोचर करेंगे।

ग्रहों की स्थिति

श्रावण शुक्ल पक्ष में वक्री **शनि**, **गुरु**, **राहु** तथा **केतु** पूर्ववत क्रमशः वृश्चिक, कन्या, सिंह व कुंभ राशि में स्थित रहेंगे। इसी प्रकार **सूर्य** और **मंगल** कर्क तथा **बुध** सिंह राशि में स्थित रहेंगे। **शुक्र** २६ जुलाई को सायं ५.०८ बजे वृष से मिथुन में प्रवेश करेंगे।

सेकुलर पाखण्ड की पराकाष्ठा

सैनिकों की शहादत पर शोक क्यों नहीं

सेकुलर–लिबरल–नक्सल गठजोड़ फिर से सक्रिय हो गया है। वही 'अवार्ड वापसी' के समय के चेहरे कुछ काल की शीत–निद्रा (हाइबरनेशन) के बाद पुनः दिखाई देने लगे हैं। गम्भीरता को चेहरों पर ओढे ये वही लोग हैं, जो भारत राष्ट्र का विरोध करने के लिये कभी नर्मदा बाँध पर तो कभी कुडकुलम के परमाणु संयत्र पर, कभी आतंकियों के बचाव में तो कभी जनेवि के देश के टुकड़े करने वाले छात्रों के समर्थन में खड़े दिखाई देते हैं। इनमें कुछ बुढ़ा गये फिल्मी कलाकार हैं, कुछ भारत द्वेषी लेखक हैं और कुछ जवाहर लाल नेहरु विवि जैसे कुछ संस्थानों के ज्ञानी लोग हैं। इस बार ये धुरंधर गत २९ जून को 'नॉट इन माई नेम' का झण्डा उठा कर दिल्ली के जन्तर–मन्तर पर इकट्ठे हुए। कुछ और शहरों में भी दस–बीस लोग उक्त नारे की पट्टियाँ लिये खड़े दिखाई दिये।

सब कुछ पूरी योजना के साथ किया गया था। सेकुलर गठजोड़ के समर्थक समाचार–पत्रों ने बड़ी–बड़ी तस्वीरों के साथ समाचार प्रकाशित किये। कलम–घिस्सुओं ने उसी दिन सम्पादकीय लिख डाले और कुछ ज्ञानियों ने तुरत–फुरत वक्तव्य भी दे दिये जो समाचारों के साथ प्रमुखता से दिये गये। यही नहीं जो लोग प्रदर्शन में शामिल हुए उनकी दर्द–भरी टिप्पणियाँ भी सेकुलर मीडिया में आईं। यह सब इसलिये हो रहा है कि इस वर्ष के अंत में गुजरात, हिमाचल प्रदेश और उसके बाद कर्नाटक में चुनाव होने हैं। जैसा विषाक्त वातावरण बिहार के चुनावों के पहले बनाया गया था वैसा ही वातावरण सेकुलर जमात फिर बनाना चाहती है।

बूढ़ी बिल्ली का भजन– इन सेकुलर तमाशों का कारण बनी बल्लभगढ़ की घटना जिसमें जुनैद खाँ नाम के एक नौजवान की हत्या हो गई थी। इसके पहले अलवर में मारे गये गो–तस्कर पहलू खान का प्रकरण भी इसके साथ जोड़ दिया गया। तीन तिलंगों का उक्त गठजोड़ यह दुष्प्रचार कर रहा है कि देश में अल्पसंख्यक (?) मुस्लिम समुदाय सुरक्षित नहीं है। विचारधारा और मज़हब के नाम पर लोगों को मारा जा रहा है।

पंचतंत्र में एक कथा है कि एक बिल्ली बूढ़ी हो गई और शिकार करने में उसे कठिनाई आने लगी। एक दिन वह आसन लगा कर बैठ गई और आँखें बन्द कर माला फेरने लगी। एक चूहे ने सोचा कि बिल्ली को वैराग्य हो गया है। इसने दूर से ही पूछा कि बिल्ली मौसी क्या सन्यास ले लिया है?

बिल्ली ने आँखें खोली और कहा, कि हाँ बेटा बुढ़ापे में मैंने अब हिंसा न करने का व्रत ले लिया है। बिल्ली ने फिर कहा, बेटा तुम कौन हो, आँखें कमजोर होने से मुझे दिख नहीं रहे हो, जरा पास आकर बात करो। जैसे ही चूहा पास आया बिल्ली ने झपट्टा मारा और चूहे को उदरस्थ कर लिया।

तब कुछ नहीं बोले– सेकुलर गठजोड़ वाले ज्ञानी भी ऐसे ही महा–पाखण्डी हैं। कश्मीर घाटी में जब कश्मीरी पण्डित मारे जा रहे थे तो ये पाखण्डी आँखें बन्द कर माला जप रहे थे। तब उन्होंने ऐसा कोई नारा नहीं दिया कि 'नाम पर मत मारो'। केरल में विचार धारा के नाम पर स्वयंसेवकों को मारा जा रहा है, उस पर ये मन ही मन प्रसन्न होते हैं। पूना में तीन जिहादियों ने एक पिछड़े वर्ग के हिन्दू को मिट्टी का तेल छिड़क कर जला दिया। इस प्रकार की घटना पर तीन तिलंगों का गठजोड़ कोई प्रदर्शन नहीं करता। तीन साल पहले उत्तर प्रदेश के कैराना, शामली आदि स्थानों पर हिन्दू समाज पर अत्याचार हो रहे थे, उस समय भी कोई नहीं बोला। और अभी ३ जुलाई को ही प.बंगाल के (बसीरहाट) में उन्मादी भीड़ ने कार्तिक घोष को पीट–पीट कर मार दिया। उस पर भी उक्त ज्ञानी–जनों की कोई प्रतिक्रिया नहीं आई।

इन्सान की जान सबसे मूल्यवान वस्तु है और किसी भी कारण से किसी की जान लेना सबसे बड़ा पाप है और इसका कोई समर्थन नहीं करेगा।

पर इसी के साथ पहलू खान और जुनैद मामलों की भी सचाई जान लेनी चाहिये। पहलू खान गायों की तस्करी करता था और पहले भी उस पर आरोप लग चुके थे। घटना वाले दिन भी वह गायों को ले जा रहा था। कार्यकर्ताओं ने सूचना मिलने पर गायें छुड़ा लीं। इसके बाद कुछ अन्य लोगों ने पहलू खान से मार–पीट की जिसमें उसकी मृत्यु हो गई। पुलिस ने दोषियों को गिरफ्तार भी कर लिया। यह एक अपराधिक मामला था। इसी प्रकार जुनैद खान का ट्रेन की सीट को लेकर झगड़ा हुआ। सेकुलरवादियों ने तुरंत प्रचार करना शुरु कर दिया कि गोमांस के कारण जुनैद को मारा गया। बाद में जब सोशल मीडिया पर सचाई आने लगी तो मीडिया

सच्चा सेकुलरवाद !

गत ६ जुलाई को दिल्ली में विमान परिचारिका का प्रशिक्षण ले चुकी एक युवती को सरे-आम चाकुओं से मार दिया। यह घटना दूरदर्शन वाहिनियों में भी दिखाई गई थी। समाचारों के अनुसार आरोपी आदिल और उसके साथी जुनैद खान को गिरफ्तार कर लिया गया है। लेकिन मीडिया में यह समाचार छिपाया जा रहा है। यदि ऐसी ही घटना में कोई बहुसंख्यक किसी तथाकथित अल्पसंख्यक को मार देता तो अब तक देश में बवाल मच जाता। ऐसी घटना के साथ तुरंत गो-रक्षकों को जोड़ दिया जाता। 'ज्ञानी' लोग एक प्रदर्शन और कर देते तथा सेकुलर मीडिया में बहसें शुरु हो जातीं, सम्पादकीय लेख छप जाते और देश में तानाशाही होने का आरोप लग जाता। लेकिन मृतका हिन्दू थी इसलिये पूरी घटना की अनदेखी की जा रही है। यही है सच्चा सेकुलरवाद।

ने भी अपना दुष्प्रचार कम किया। लेकिन सेकुलर पाखण्डियों का रुदन बन्द नहीं हुआ और किसी न किसी बहाने वे गो–रक्षकों पर आरोप लगाते रहे। इसके बाद २९ जून को मुँह पर पट्टियाँ बाँध बूढ़ी बिल्ली की तरह सेकुलर ज्ञानी जन्तर–मन्तर (दिल्ली) पर इकट्ठे हो गये।

अय्यूब पण्डित की शहादत –जिस दिन बल्लभगढ़ की दुर्घटना हुई उसी दिन श्रीनगर में पुलिस के उप–अधीक्षक **अय्यूब पण्डित** को भीड़ ने पत्थरों से मार दिया। अलगाववादी मीर वायज की सुरक्षा में तैनात मोहम्मद अय्यूब पण्डित शबे–कद्र की रात जामिया मस्जिद में नमाज पढ़ कर आये थे और मस्जिद में भाषण दे रहे मीर वायज की सुरक्षा के लिये खड़े थे। तभी उन्मादी भीड़ ने उन पर पत्थर बरसाने शुरु कर दिये और उनके मरने के बाद उनके शव को घसीटते रहे। इसके पहले १७ जून को अनंतनाग में आतंकी हमले में पुलिस के छह जवानों को मार दिया गया। कश्मीर के आतंकियों ने घात लगा कर पुलिस की जीप पर हमला किया जिसमें अच्छा–बल थाने के प्रभारी फिरोज डार सहित जम्मू–कश्मीर पुलिस के छह जवान शहीद हो गये। मानसिक विकृति के उग्रवादियों ने उनके शवों को भी क्षत–विक्षत कर दिया।

इसके भी पहले आतंकियों ने भारतीय सेना के एक अधिकारी ले.उमर फैयाज की भी हत्या कर दी। कश्मीर के ही निवासी उमर फैयाज सेना–अधिकारी का अपना प्रशिक्षण पूरा कर अपने गाँव लौटे थे। गाँव में उनकी चचेरी बहिन के विवाह के लिये उन्होंने छुट्टियाँ लीं थीं। गत ८ मई को आतंकियों ने उनके घर में घुस कर उनका अपहरण कर लिया। उन्हें यातनायें देने के बाद गोलियों से भून कर उनका शव गाँव के चौक में पटक दिया गया।

पाखण्ड और केवल पाखण्ड– प्रश्न यह है कि अय्यूब पण्डित, फिरोज डार और उमर फैयाज की हत्या शेष घटनाओं अर्थात् पहलू, जुनैद, अखलाक की मृत्यु से कैसे अलग है? पुलिस अधिकारी मो. अय्यूब पण्डित को भीड़ ने पत्थरों से मारा, थानेदार फिरोज डार की जीप पर घात लगा कर हमला किया गया तथा निहत्थे ले.फैयाज को कायर आतंकियों ने अपहरण के बाद गोली मार दी। तीनों ही घटनाओं में मृतकों के शवों को क्षत–विक्षत किया गया। सेकुलर पाखण्डियों ने उक्त घटनाओं की निन्दा में एक शब्द नहीं कहा। सेकुलर–लिबरल–नक्सल गठजोड़ का एक भी ज्ञानी मुँह पर पट्टी बाँध कर विरोध करने नहीं आया। उक्त शहीद भी मुसलमान थे और उन्मादी भीड़ ने क्रूरता से उन्हें मारा था। लेकिन कोई सेकुलर बुद्धिजीवी कश्मीर के उन्मादियों के विरोध में खड़ा नहीं हुआ। किसी ने कोई वक्तव्य नहीं दिया। किसी ने दर्द भरे लेख और सम्पादकीय नहीं लिखे।

वास्तविकता यह है कि तीन तिलंगों का गठजोड़ भारत राष्ट्र के विरोध में खड़ा है। यही वे लोग हैं जिन्होंने भारत के इतिहास को विकृत किया। भारत के गौरवशाली इतिहास की अनदेखी कर हमारे इतिहास को 'गुलामी का इतिहास' बताने वाले पाखण्डी ये ही हैं। ये ही वे ज्ञानीजन हैं जो कहते हैं कि भारत कभी एक राष्ट्र नहीं था और अभी भी एक राष्ट्र नहीं है। बुद्धिजीवी होने का आडम्बर करने वाले ये वही लोग हैं जो नक्सलियों, कश्मीर के जिहादियों और नागालैण्ड के विद्रोहियों के साथ खड़े दिखाई देते हैं। जो भारत के हजारों टुकड़े करने की इच्छा करने वालों की पीठ पर हैं और जो अफजल गुरु, मकबूल बट और याकूब मेनन जैसे आतंकियों (तीनों को फाँसी हुई) को शहीद मान उनकी पुण्य तिथि मनाते हैं। यही नहीं ये श्रीमान लोग महिषासुर को भी शहीद मान कर दुर्गा नवमी पर उसका शहादत दिवस मनाते हैं। सेकुलर–लिबरलों का यह गठजोड़ वास्तव में हिन्दू समाज के साथ–साथ पूरे देश को ही बाँट देना चाहता हैं । ❑

आगामी पक्ष (१ से १५ अगस्त २०१७ तक)

(श्रावण शु .९ से भाद्रपद कृ.८ तक)

पुण्यतिथि

११ अगस्त (१९०८) – खुदीराम बोस की शहादत

१३ अगस्त (१७९५) – महारानी अहिल्याबाई होल्कर की पुण्यतिथि

१४ अगस्त (१९१५) – सरदार बन्ता सिंह की शहादत

१५ अगस्त (१९४२) – भारत छोड़ो आंदोलन में देवशरण सिंह,फुलेना प्रसाद, उदयचन्द की शहादत

–महान क्रांतिकारी सरदार अजीत सिंह का महाप्रयाण (१९४७)

महत्वपूर्ण घटनायें

९ अगस्त (१९४२) – भारत छोड़ो आंदोलन प्रारम्भ, पं. रामप्रसाद बिस्मिल के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने काकोरी के पास अंग्रेजों का खजाना लूटा (१९२५)

१४ अगस्त १९७७)– अखण्ड भारत स्मृति दिवस

१५ अगस्त (१९४७)– खण्डित भारत की स्वतंत्रता

८ अगस्त (१५०९)– श्रीकृष्णदेव राय का राज्याभिषेक (विजयनगर साम्राज्य)

जन्म दिवस

१ अगस्त (१८८२) – राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन की जयंती।

२ अगस्त (१८६१) – प्रसिद्ध रसायन शास्त्री आचार्य प्रफुल्ल चन्द्र राय का जन्म दिवस।

भाद्रपद कृ.८(८ अग.)–योगेश्वर श्रीकृष्ण का जन्म दिवस (जन्माष्टमी)

– संत ज्ञानेश्वर जयंती (वि. १३३२)

१३ अगस्त (१६३८) – वीर दुर्गादास राठौड़ की जयंती।

१५ अगस्त (१८७२) – महर्षि अरविन्द की जयंती।

अवसर विशेष

श्रावण पूर्णिमा (७ अगस्त)– रक्षाबंधन, संस्कृत दिवस

'स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है' के उद्घोषक लोकमान्य तिलक

वैसे तो वीर प्रसूता भारत भूमि ने अनगिनत सपूतों को जन्म दिया है, किन्तु उनमें से लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का स्थान निश्चित ही अग्रणी है। प्रखर राजनैतिक चिन्तक, महान देशभक्त का जन्म महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले के चिरबल ग्राम में २३ जुलाई १८५६ को हुआ। आपके पिता अध्यापक थे तथा समाजसेवी भी। जब वे १० वर्ष के थे तब आपकी मां का निधन हो गया और माँ के निधन के ६ वर्ष बाद उनके पिता का भी स्वर्गवास हो गया। तिलक बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि एवं प्रखर मेधा के धनी थे। कठोर परिश्रम एवं अपनी बुद्धिमत्ता के बलबूते तिलक ने पहले बी ए और बाद में एलएलबी की परीक्षायें उत्तीर्ण की। गणित और संस्कृत तिलक के प्रिय विषय थे।

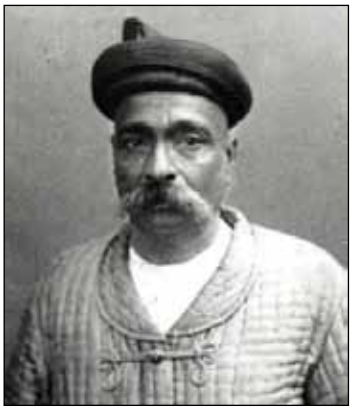

राष्ट्र के लिए समर्पण - 'डबल ग्रेजुएट' होने के कारण तिलकजी को ब्रिटिशों के शासन में अच्छी वेतन वाली नौकरी आसानी से मिल सकती थी किन्तु इसके विपरीत उन्होंने अपने आपको देश सेवा के लिए समर्पित कर दिया। १५ वर्ष की आयु में आपका विवाह सत्यभामा नाम की एक सुशील कन्या से हुआ। लोगों के मन में स्वराज्य की प्यास उत्पन्न करने के लिए भारतीय संस्कृति पर आधारित शैक्षणिक संस्थाओं का निर्माण आवश्यक था। इसी क्रम में तिलक जी ने अपने सहयोगी शिक्षकों के साथ **न्यू इंगलिश हाई स्कूल** का सन् १८८० में प्रारम्भ किया जो कालांतर में **डक्कन एज्यूकेशन सोसाइटी** में परिणित हुई। पूना के फर्ग्यूसन कॉलेज तथा ग्रेटर महाराष्ट्र कामर्स एण्ड एकॉनॉमिक्स कॉलेज, मुम्बई के बॉम्बे कालेज, सांगली के विलिंग्डन कॉलेज एवं अन्यान्य शिक्षण संस्थाओं का संचालन इस सोसायटी के अन्तर्गत होता है।

इसी के साथ समाज को सुसंगठित करने तथा देश की स्थिति तथा कर्तव्यों के प्रति जाग्रत करने के लिए तिलक जी ने विद्यालय के प्रारम्भ होने के दूसरे ही वर्ष दो साप्ताहिक समाचार पत्र शुरू किए। इनमें एक था मराठी साप्ताहिक 'केसरी' एवं दूसरा अंग्रेजी साप्ताहिक 'मराठा'। इन समाचार पत्रों की भाषा इतनी प्रभावी होती थी कि जनमानस में गहरे तक पैठ कर उसमें स्वतंत्रता की लौ जलाने का काम करती थी।

महत्वपूर्ण वर्ष - सन् १८९० से १८९७ के सात वर्ष तिलक जी के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष साबित हुए जब उन्होंने शैक्षणिक क्षेत्र से निकलकर राजनीति में पदार्पण किया। उनकी असाधारण कार्यक्षमता अनेक दिशाओं में मुखर होने लगी। सामाजिक सुधार के लिए उन्होंने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध एक लड़ाई छेड़ दी। बाल विवाह पर प्रतिबंध तथा विधवा विवाह के लिए उन्होंने आह्वान किया।

गणेशोत्सव और शिवाजी जयंती समारोह को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान करने में उनकी कुशल संगठन शक्ति एवं सामर्थ्य का ज्ञान होता है।

अंग्रेजी सत्ता का विरोध - तिलक जी को अपने जीवन मूल्यों से समझौता न कर पाने के कारण अनेकों बार जेल की यात्राऐं करनी पड़ी। जब महाराष्ट्र में १८९६ में पहले अकाल और बाद में प्लेग की महामारी फैली तो अंग्रेजी हुकूमत की उदासीनता के विरुद्ध उन्होंने अपने साप्ताहिक पत्रों के माध्यम से सरकारी नीतियों की कड़ी आलोचना की। २२ जून १८९७ को विक्टोरिया रानी के राज्यारोहण समारोह के अवसर पर चाफेकर बन्धुओं द्वारा अंग्रेज प्लेग अधिकारी रैंड की हत्या कर दी जिसका दोषी अंग्रेजी हुकूमत ने तिलक को माना और उन्हें डेढ़ वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी। फिर भी वे चाफेकर बन्धुओं को फांसी दिये जाने का खुलकर विरोध करते रहे।

सजा काटकर आने पर तिलक जी राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के प्रणेता के रूप में उभरे। उन्होंने १९०५ के बंग-भंग आन्दोलन का खुल कर समर्थन किया। पंजाब के लाला लाजपत राय और बंगाल के विपिन चंद्र पाल भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में लाल-बाल-पाल की तिकड़ी के नाम से विख्यात हुई। उनकी लेखनी इतनी सशक्त थी कि अंग्रेजी हकूमत केसरी में छपे उनके लेखों से परेशान रहती थी। इसी का परिणाम था कि जब ३०अप्रेल १९०८ को खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने मुजफ्फरपुर में बम विस्फोट किया तब मई, जून के अंकों में छपे उनके सम्पादकीय को राजद्रोह ठहरा कर अंग्रेजी जज ने उन्हें छह साल की सजा सुनाई।

महान जीवन महान व्यक्तित्व - केसरी में प्रकाशित 'देश का दुर्भाग्य' शीर्षक से लिखे लेख पर सरकार ने उन्हें देशद्रोह के आरोप में २४ जून १९०८ को छह वर्ष के लिए मण्डाले (बर्मा) कारागार में भेज दिया। अपने खराब स्वास्थ्य और विपरीत परिस्थितियों के बीच कारागृह में रहकर '**गीता रहस्य**' जैसी कालजयी कृतियों की रचना की।

मण्डाले के कारागृह से ८ जून १९१४ को तिलक जी मुक्त हुए। उस समय कांग्रेस में गुटबाजी चरम पर थी। नरम दल और गरम दल दोनों गुटों की एकता के प्रयास असफल सिद्ध हुए और तब उन्होंने एक स्वतंत्र संगठन **होम रूल लीग** की स्थापना की जिसका प्रथम उद्देश्य स्वराज्य प्राप्त करना था। होम रूल का अर्थ है अपने घर की व्यवस्था स्वयं देखना। स्वराज्य की अवधारणा के लिये वे जीवन पर्यन्त सक्रिय रहे। वे धुन के पक्के और वचन के पक्के थे, तभी तो गांधी जी ने उन्हें लोकमान्य की उपाधि से विभूषित किया। अपने कार्य में आकण्ठ डूबे रहने से आपका स्वास्थ्य दिनोंदिन बिगड़ता जा रहा था और १ अगस्त १९२० को ६४ वर्ष की आयु में इस महापुरुष ने चिरशांति प्राप्त की।

तिलक जी की मृत्यु पर महात्मा गांधी ने कहा था *''उन्होंने फौलादी इच्छा शक्ति का उपयोग देश सेवा के लिए किया।''* भावी पीढ़ियां तिलक को आदर के साथ याद करती रहेंगी। ''

- केदार चतुर्वेदी

१५ अगस्त पर प्रकाशित होने वाला पाथेय कण का

''कृषि विशेषांक''

स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व पर पाथेय कण का एक और विशेषांक ***कृषि-किसान*** *पर प्रकाशित किया जा रहा है। इस अंक में कृषि, पशुपालन और ग्राम-विकास से सम्बन्धित सामग्री देने का प्रयास करेंगे। अतः उक्त विषयों पर ३१ जुलाई २०१७ तक सामग्री प्रेषित करने का सभी पाठकों से अनुरोध है। विशेषांक की विज्ञापन दरें इस प्रकार रहेंगी।*

आवरण पृष्ठ अंतिम (बहुरंगा)	*५,००,०००/-*
आवरण पृष्ठ २ व ३ (बहुरंगा)	*३,००,०००/-*
रंगीन पृष्ठ (पूर्ण)	*१,००,०००/-*
रंगीन पृष्ठ (आधा)	*५०,०००/-*
सामान्य पृष्ठ (पूर्ण)	*५०,०००/-*
सामान्य आधा पृष्ठ	*२५,०००/-*
सामान्य चौथाई पृष्ठ	*१२,५००/-*
शुभकामना संदेश	*५,०००/-*

-: कार्यालय :-

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, पाथेय पथ
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)

E-mail: patheykan@gmail.com

जाह्नवी के 3 वर्ष के ग्राहक बनें

36 अंक=~~900~~ नहीं 700 रु.

दें और पाएं 499 रु. का

पर्लपेट कंपनी का लंच बाक्स

मुफ्त

योजना 31 जुलाई तक है, लंच बाक्स रजिस्टर्ड डाक से भेजा जाएगा।
धन आज ही भेजें। पहले भेजें पहले पाएं।

किसी भी जानकारी के लिए फोन पर संपर्क करें।

जाह्नवी (मासिक) डब्ल्यू जेड-41, दसघरा, नई दिल्ली-110012
फोन : 9911601615, 9891788245, 011-25844818
E-mail : jahnavi1966@gmail.com jahnavi_m_p@yahoo.co.in

संस्कृत के नमस् से बना नमाज

हजारों साल जनमानस से लेकर साहित्य की भाषा रही संस्कृत। कालांतर में करीब-करीब सुस्ता कर बैठ गई, जिसका एक मुख्य कारण इसे देवत्व का मुकुट पहनाकर पूजाघर में स्थापित कर दिया जाना था।

भाषा को अपने शब्दों की चौकीदारी नहीं सुहाती। भाषा कॉपीराइट में विश्वास नहीं करती, वह तो समाज के आँगन में बसती है। भाषा तो जिस संस्कृति और परिवेश में जाती है, उसे अपना कुछ न कुछ देकर ही आती है।

दजला और फ़रात के भूभाग से संस्कृत गुजरी तो उस स्थान का नामकरण ही कर दिया। हरे-भरे खुशहाल शहर को 'भगवान प्रदत्त' कह डाला। संस्कृत का भगः शब्द फ़ारसी में बग हो गया और दत्त हो गया दाद और बन गया बग़दाद।

इसी प्रकार संस्कृत का अश्वक प्राकृत में बदला आवगन और फ़ारसी में पलटकर अफ़ग़ान हो गया और साथ में स्थान का प्रत्यय स्तान में बदलकर मिला दिया और बना दिया **हिंद का पड़ोसी अफ़ग़ानिस्तान -यानी निपुण घुड़सवारों की निवास-स्थली।** स्थान ही नहीं, संस्कृत तो किसी के भी पूजाघरों में जाने से भी नहीं कतराती क्योंकि वह तो यह मानती है कि ईश्वर का एक नाम अक्षर भी तो है। अ-क्षर यानी जिसका क्षरण न होता हो।

इस्लाम की पूजा पद्धति का नाम यूँ तो कुरान में सलात है लेकिन मुसलमान इसे नमाज़ के नाम से जानते और अदा भी करते हैं। नमाज़ शब्द संस्कृत धातु नमस् से बना है।

इसका पहला उपयोग ऋगवेद में हुआ है और अर्थ होता है- आदर और भक्ति में झुक जाना। गीता के इस श्लोक को देखें **- नमो नमस्तेऽस्तु सहस्रकृत्वः पुनश्च भूयोऽपि नमो नमस्ते। (११/३९)**

संस्कृत शब्द नमस् की यात्रा भारत से होती हुई ईरान पहुंची जहाँ प्राचीन फ़ारसी अवेस्ता उसे **नमाज़** पुकारने लगी और आख़िरकार तुर्की, अज़रबैजान, तुर्कमेनिस्तान, किर्गिजस्तान, उज्बेकिस्तान, ताजिकिस्तान, अफ़ग़ानिस्तान, पाकिस्तान, भारत, बांग्लादेश, बर्मा, इंडोनेशिया और मलेशिया के मुसलमानों के दिलों में घर कर गई।

संस्कृत ने पछुवा हवा बनकर पश्चिम का ही रुख़ नहीं किया बल्कि यह पुरवाई बनकर भी बही। चीनियों को **मौन** शब्द देकर उनके अंतस को भी छू गई।

चीनी भाषा में ध्यानमग्न खामोशी को **मौन** कहा जाता है और स्पर्श को **छू** कहकर पुकारा जाता है।

साभार- *बीबीसी हिंदी डॉटकॉम*

जब शास्त्री जी ने कूलर वापस कर दिया

बात उन दिनों की है, जब लाल बहादुर शास्त्री जी उत्तर प्रदेश के गृह मंत्री थे। बड़े पद पर पहुँच कर भी वह सादा जीवन जीते थे। सुविधा की कोई चीज और ऐशो-आराम के लिए कुछ भी भौतिक वस्तुओं का उपयोग नहीं करते थे।

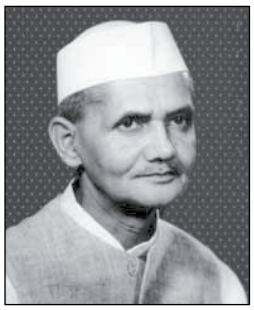

गृह मंत्री बनने पर वह सरकारी बंगले में आकर रहने लगे। एक दिन बिना उनसे पूछे व बिना उनकी जानकारी के सार्वजनिक निर्माण विभाग वालों ने उनके बंगले में कूलर लगा दिया। घर वाले यह देखकर खुश हो गए।

उन दिनों गर्मी का मौसम था और सब लोग गर्मी से परेशान थे। कूलर लगने से सबको राहत मिली। उधर शास्त्री जी इससे बेखबर थे। दिन भर ऑफिस का काम निपटाने के बाद देर शाम को जब शास्त्री जी घर पहुँचे, तो उन्हें घर पर सरकारी कूलर लगने की बात बताई गई।

यह जानकर वह कुछ गंभीर हो गए और घर वालों से बोले- *''जरूरत पड़ने पर धूप-लू में निकलना ही पड़ेगा। लड़कियां शादी के बाद न जाने कैसी स्थिति में रहें? हमें फिर इलाहाबाद के अपने पुश्तैनी मकान में रहना पड़ सकता है। इस तरह कूलर से तो सबकी आदतें बिगड़ेंगी हीं।''*

घर वाले सुनकर चुप रह गए। शास्त्री जी को इतना कहकर भी संतोष नहीं हुआ। उन्होंने तुरंत सार्वजनिक निर्माण विभाग को फोन कर दिया कि मेरे घर पर लगाया गया कूलर हटा दिया जाए। उनका आदेश था, इसलिए अगले दिन ही उनके आवास से कूलर हट गया। शास्त्री जी को राहत मिली। जिसने भी यह प्रसंग सुना, उसने शास्त्री जी की सादगी की प्रशंसा की।

झाड़ू उठाई और सफाई करने लगे

समाज सुधारक ईश्वरचन्द्र विद्यासागर स्वावलम्बन, सादगी, संस्कार व परिश्रम के जीवंत प्रतीक थे।

एक बार उनको एक सभा की अध्यक्षता करनी थी। उनके बारे में सर्वविदित था कि उनका प्रत्येक कार्य घड़ी की सूई के साथ चलता है। वे भी सभी से यही अपेक्षा रखते थे कि अपना कार्य समय पर करें।

विद्यासागर जी जब निश्चित समय पर सभा स्थल पहुँचे तो देखा कि कुछ लोग बाहर घूम रहे हैं। जब उन्होंने इसका कारण पूछा तो उन्हें बताया गया कि सफाई कर्मचारियों के न आने के कारण अभी भवन की सफाई नहीं हुई है।

अतः हम सभी सफाई कर्मचारियों के आने का प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह सुनते ही विद्यासागर जी बिना समय गँवाए झाड़ू उठा कर उस स्थान की जहाँ कार्यक्रम होना था सफाई करने लगे। उन्हें ऐसा करते देख सभी लोग चौंक गए और देखते ही देखते सब लोगों ने भी सफाई करनी शुरु कर दी। कुछ समय में ही सभास्थल साफ हो गया और सभागार भवन का सारा फर्नीचर व्यवस्थित लगा दिया गया।

जब सभा आरम्भ हुई तो ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने अपने संबोधन में कहा, 'कोई व्यक्ति हो या राष्ट्र, उसे स्वावलम्बी होना चाहिए और आवश्यकता पड़ने पर किसी भी कार्य को करने में संकोच नहीं करना चाहिए। यही सफलता का मूल मंत्र है।'

बाल-प्रश्नोत्तरी

बाल मित्रों! इस अंक में रामायण से संबंधित दस प्रश्न पूछे जा रहे हैं। प्रश्नों के उत्तर चार विकल्पों में दिये गये है जिनमें से एक उत्तर सही है। इस उत्तर को ढूंढ़ो और अपने सामान्य ज्ञान की परीक्षा लो।

१. भगवान श्रीराम ने किस युग में अवतार लिया था?
(अ) सतयुग (ब) त्रेतायुग (स) द्वापर युग (द) कलियुग

२. श्रीराम का जन्म किस नगर में हुआ था?
(अ) अयोध्या (ब) मिथिला (स) वैशाली (द) पाटलिपुत्र

३. भगवान श्रीराम को जन्म देने वाली माता का नाम क्या था?
(अ) सुमित्रा (ब) कैकयी (स) कौशल्या (द) मंथरा

४. राजा दशरथ की कितनी रानियाँ थीं?
(अ) दो (ब) तीन (स) चार (द) पाँच

५. श्रीराम के अनुज लक्ष्मण की माता का नाम क्या था?
(अ) उर्मिला (ब) सुमित्रा (स) मंदोदरी (द) अहिल्या

६. भगवान श्रीराम का जन्म किस कुल में हुआ?
(अ) यदुकुल (ब) रघुकुल (स) चन्द्रकुल (द) कुरूकुल

७. भगवान शिव की पत्नी सती के पिता का नाम क्या था?
(अ) सूर्यकेतु (ब) श्वेतकेतु (स) सत्यकेतु (द) दक्ष प्रजापति

८. महाराजा दशरथ के गुरु कौन थे?
(अ) विश्वामित्र (ब) वशिष्ठ (स) श्रृंगी (द) भरद्वाज

९. दशरथ के लिए पुत्र कामेष्टि यज्ञ करने वाले ऋषि कौन थे?
(अ) श्रृंगी (ब) वशिष्ठ (स) जमदग्नि (द) जाबाल

१०. पक्षियों का राजा किसे कहा जाता है?
(अ) मयूर (ब) हंस (स) गरुड़ (द) काग

-उत्तर इसी अंक में हैं।

तो सरकार का मंत्री आपके सामने खड़ा होता

गत २६ जून को दिल्ली में शासन कर रहे दल के एक पूर्व पत्रकार नेता ने कहा कि आज भी देश में आपात-काल लगा हुआ है। ये नौजवान नेता राजनीति में आने पहले एक दूरदर्शन चैनल में थे। आपात-काल जब लगा तक उनका जन्म भी नहीं हुआ था। इसलिये उन्हें नहीं पता उस काले अध्याय की विभीषिका। सत्ता-सुख भोगते हुए कोई भी वक्तव्य दे देने में जोर नहीं आता। लेकिन पत्रकार होने के नाते उन श्रीमान् नेताजी को आपात-काल के सम्बन्ध में कुछ जानकारी अवश्य कर लेनी चाहिये थी।

जिन लोगों ने उन भयानक उन्नीस महीनों को भोगा था वे ही अधिकार से आपात-काल के सम्बन्ध में कुछ कह सकते हैं। उन दिनों सम्पूर्ण देश में भय और आतंक का वातावरण था। अपने घर में भी लोग बड़े दबे स्वर में बात-चीत करते थे। भय रहता था कि दीवारों के भी कान होते हैं। किसी ने भी खुले में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती गाँधी का यदि नाम भी ले लिया तो उसे डी.आई.आर., मीसा या सी आर पी सी में बन्द कर दिया जाता था। समाचार पत्रों में वही छपता था, जिसे सरकार छापने की अनुमति देती थी। हजारों लोगों पर जेलों में भीषण अत्याचार किये गये। अनेकों को नौकरियों से निकाल दिया गया, केवल इसलिये कि वे सरकार विरोधी विचार के माने गये। हजारों परिवारों को उनके मुखियाओं को जेलों में ठूंस कर बर्बाद कर दिया गया। जिन्होंने इस तानाशाही का हिम्मत से सामना किया, उनमें से कुछ के संस्मरण पिछले अंक में दिये गये थे। कुछ और संस्मरण यहाँ दिये जा रहे हैं –

उस समय राजस्थान सरकार में मकराना के ए.आर.चौधरी उपमंत्री थे। उन्हीं दिनों मेरी नियुक्ति एस.बी.बी.जे.की मकराना शाखा में सहायक प्रबन्धक के पद पर हुई। उस समय मकराना तहसील कार्यवाह का दायित्व भी मुझ पर था। मैंने नौकरी के साथ-साथ शाखा का कार्य भी प्रारंभ कर दिया।

चौधरी जी की मंडली जिसमें कुछ बैंक कर्मी भी सम्मिलित थे संघ से अत्यंत नाराज थे। उसी दौरान तीन तहसीलों (मकराना, डीडवाना, परबतसर) का एक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया। परबतसर संघचालक के किसी कारण से नहीं आने पर शिविर का उत्तरदायित्व निभाने का आदेश मुझे मिला।

तभी अचानक २६ जून १९७५ को अपातकाल घोषित कर दिया गया। अब तो विरोधियों को मेरे विरुद्ध शिकायत करने का अच्छा अवसर मिल गया था। अतः मेरे द्वारा हस्ताक्षरित शिविर के प्रवेश पत्रों को संलग्न कर दिल्ली दरबार में मेरी शिकायत की गई।

शीघ्र ही मेरे प्रधान कार्यालय से मेरे विरुद्ध जांच के आदेश आ गये। संयोगवश इसी कालखण्ड में नियंन्त्रक महोदय का स्थानान्तरण हो गया। उनके स्थान पर श्री आर.आर. सिरोडकर ने पदभार ग्रहण किया। मेरा प्रकरण उन्हीं के समक्ष जाँच हेतु प्रस्तुत हुआ।

श्री सिरोडकर ने तत्काल मुझे मकराना से अन्यत्र प्रति

लगता है आपातकाल का विरोध हो रहा है

आपातकाल के विरोध में बनी 'लोक संघर्ष समिति' के आह्वान पर बीकानेर के कोटगेट पर सत्याग्रह का कार्यक्रम तय हुआ। १७ नवम्बर १९७५ की शाम ५ बजे मैं और मेरे पाँच सत्याग्रही साथी (श्रीदत्त दुबे, ब्रह्मानन्द गहलोत, विजय भट्ट, ओमप्रकाश राय, आशुतोष रावल) महात्मा गांधी मार्ग से पर्चे बांटते एवं नारे लगाते हुए कोटगेट पहुँचे।

कोटगेट के आस-पास जब तक काफी भीड़ जमा हो गयी थी। शीघ्र ही पुलिस ने हमें बन्दी बना लिया। कोटगेट पुलिस चौकी पर सभी सत्याग्रहियों से पुलिस वालों ने पहले गाली-गलौज की और फिर धमकाया तथा मेरे साथ मारपीट भी की गई। पुलिस चौकी से हम सभी को सिटी कोतवाली ले जाया गया। वहाँ पर भी बहुत डराया-धमकाया गया। मेरे पाँचों साथियों को एक कोठरी में रखा गया। मुझे उनसे अलग एक कोठरी में रखा। उसी रात को मेरे एवं दुबेजी के साथ पुलिस वाले हमारे घर गये तथा घर की तलाशी ली।

अगले दिन १८ नवम्बर को गुरु नानक जयन्ती का अवकाश था इसलिए मजिस्ट्रेट के निवास पर हम सत्याग्रहियों को प्रस्तुत किया गया। वहाँ पर हमसे पूछा गया कि आपमें से कोई घर जाना चाहता है? सभी ने 'ना' में सिर हिलाया और जेल जाने की बात कही। उसी रात को ८ बजे हम सभी को जेल भेज दिया गया। वहाँ पर सभी राजनीतिक व सामाजिक बन्दियों ने हमारा स्वागत करते हुए कहा कि 'अब ऐसा लग रहा है जैसे देश में आपातकाल का विरोध हो रहा है।'

१८ नवम्बर १९७५ से एक मार्च १९७६ तक हम जेल में रहे। मेरी एम.ए. पूर्वार्द्ध की परीक्षा के शेष पेपर जेल के भीतर हुए। जब कभी तारीख (पेशी) पर जाते तो आपातकाल विरोधी नारे लगाते। जेल के भीतर शाखा के नियमित कार्यक्रम होते थे। प्रातः रामचरित मानस की कथा श्री शिवशंकर जी त्रिवेदी सुनाते थे। कारावास की अवधि में स्व.दाऊदयाल जी (वकील साहब) सभी कार्यकर्ताओं का उत्साह वर्द्धन करते रहते थे।

जमानत पर रिहा होने के पश्चात् भी मैं आपातकाल विरोधी गतिविधियों में सक्रिय रहा। २६ जून १९७६ आपातकाल की पहली वर्षगाँठ थी। इस अवसर पर घर से बाहर रहने को बताया गया। योजनानुसार मैं बीकानेर जिले की तहसीलों तथा गाँवों में घूम-घूम कर जन-मानस की प्रतिक्रिया की जानकारी लेता रहा। इसी दौरान पुलिस मुझे पुनः पकड़ कर ले गयी।

-मूलचंद सोलंकी, *बीकानेर*

सत्याग्रह और जेटीसी

४ जनवरी १९७६ को संघ के जिला प्रचारक उमाशंकर जी मेरे घर आये और कहा कि आपको कल (५ जनवरी) किये जाने वाले सत्याग्रह का नेतृत्व करना है। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि आप लोगो के साथ पुलिस बेरहमी से मारपीट भी कर सकती है, क्योंकि इससे पहले वाले जत्थे के साथ बहुत मारपीट की गई थी।

५ जनवरी १९७६ को मैं पूरे आत्मबल से तैयार होकर लाडपुरा चौक पर जा पहुँचा जहाँ अन्य सत्याग्रही भी कुछ समय बाद आ गये। हमारा उत्साह तब चौगुना हो गया जब रघुवीर सिंह जी कौशल की धर्मपत्नी श्रीमती शकुंतला देवी ने हम सबके माथे पर तिलक लगा और आरती उतारकर हमें रवाना किया। मन में जोश और दिल में बलिदान की आग लेकर हमारा जत्था *'इंदिरा तेरी तानाशाही–नहीं चलेगी', 'इंदिरा गांधी होश में आओ', 'भारत माता की जय'* के नारे लगाते हुए चल रहा था। साथ में हम लोग इंदिरा गांधी का पुतला लेकर मुख्य बाजार रामपुरा में पहुँचे। जैसे ही स्थानीय कार्यकर्ता की दुकान के सामने से निकले तो अचानक जोर की आवाज आई पुलिस आ रही है तुरंत पुतला दहन करो। मैंने जेब से माचिस निकाली, एक दूसरे कार्यकर्ता ने तुरंत मिट्टी का तेल डाला और आग लगा दी। तानाशाह बनी सरकार का पुतला धू–धू करके जलने लगा।

पुलिस ने हमें जलते हुए पुतले के साथ घेर लिया। उनमें से एक पुलिस वाले ने पुतले पर पानी डाला। बाकी पुलिस वालों ने हमें पकड़कर रामपुरा कोतवाली के लॉकअप में डाल दिया। दूसरे दिन मजिस्ट्रेट के सामने हम सभी को प्रस्तुत किया गया। मजिस्ट्रेट ने पाँच दिन के रिमांड पर भेजा। रिमांड के बाद एक पुलिस अधिकारी ने मुझे गाली देते हुये कहा – ''मार मार कर भूसा भर दूँगा, तुरन्त बताओ तुम्हें किसने इस काम के लिये भेजा है।

पूर्व निर्देशानुसार मैंने प्रेम जी का नाम बता दिया। उस पुलिस वाले ने फिर पूछा– ''क्या उसे पहचानते हो?'' मैंने कहा –''हाँ पहचानता हूँ''। उसने तीन लोगो को अंदर बुलाया और कहा–पहचानो इनमें से प्रेम जी कौन से हैं? मैंने कहा–इनमें से कोई नहीं। उसके बाद मुझे वापस हवालात में डाल दिया और १० जनवरी १९७६ को सेन्ट्रल जेल भेज दिया।

कोटा की सेंट्रल जेल को सत्याग्रहियों ने ''जेल ट्रेनिंग सेंटर'' का नाम दिया था। यहाँ पर हम नियमित शाखा लगाते। सुबह उठने से लेकर रात्रि सोने तक का सारा कार्यकलाप निर्धारित था।

स्व. ठाकुर दास जी टंडन (तत्कालीन विभाग प्रचारक) के सान्निध्य में यह जेटीसी चलती थी। वे होम्योपैथी के अच्छे चिकित्सक थे। सत्याग्रहियों की सार संभाल वे अच्छी तरह से करते थे। अपनत्व की भावना का प्रमाण मुझे ऐसी विकट परिस्थितियों में देखने को मिला। ❑

– हनुमान शर्मा, *कोटा*

नियुक्तियों पर भेजना प्रारम्भ कर दिया। बाद में जयपुर के प्रशिक्षण केन्द्र पर प्रशिक्षण लेने के आदेश मुझे मिले। एक दिन प्रशिक्षण केन्द्र के प्राचार्य ने मुझे सूचना दी कि आपको आपके नियन्त्रक के पास तुरन्त उपस्थिति दर्ज करवानी है।

मैं नियन्त्रक महोदय के समक्ष उपस्थित हुआ। इसके पूर्व हमारा एक–दूसरे से कभी साक्षात्कार नहीं हुआ था। ज्यों ही मैंने कक्ष में प्रवेश करने की आज्ञा मांगी, वो बोले– 'श्यामलाल'।

मैंने कहा– 'जी हाँ'

वे बोले– 'आओ बैठो' मैं बैठ गया। कुछ औपचारिक वार्तालाप के पश्चात् श्री सिरोडकर साहब गम्भीर होते हुए बोले– 'आपको ज्ञात है जगह–जगह आपको क्यों पदस्थापित किया जा रहा है और यहां क्यों बुलाया गया है?'

मैंने कहा– 'जी नहीं।'

वो बोले– 'भारत सरकार से आपके विरुद्ध जांच के आदेश आये हैं, हो सकता है आपको जेल भी जाना पड़े। मैं मौन था, क्योंकि मकराना में मेरी गिरफ्तारी की हवा जोर से फैल चुकी थी और मुझे भी इसकी जानकारी थी।

वो बोले– 'Are you confirmed member of R.S.S' (क्या आप संघ के स्थायी सदस्य हैं)

मैंने उत्तर दिया–'Sir. there is no probation period in R.S.S.' (सर, संघ में कोई परिवीक्षा काल नहीं होता)

नाराज होते हुये श्री सिरोडकर बोले– 'इसका अर्थ है आपके विरुद्ध की गई शिकायत सही है, आप दोषी हैं। आपको जेल जाने से कोई नहीं रोक सकता। आपको मालूम है मैं आपकी जाँच कर रहा हूँ। मुझे भारत सरकार को आपकी रिपोर्ट भिजवानी है।'

मैं चुपचाप बैठा रहा। वे बोले– 'क्या कहते हो?'

मैंने विनम्रता से कहा–' सर! मैंने आपसे सत्य कहा है।'

काफी समय तक वो मुझे समझाते रहे। मैंने महसूस किया कि उनकी डांट में अपनत्व एवं दुलार था। अतः मैं शान्त बैठा सुनता रहा।

थोड़ी देर पश्चात् वो बोले– 'अभी तो मैं तुम्हे खेजरोली शाखा प्रबन्धक लगा देता हूँ। वहाँ किसी प्रकार की उठा–पटक नहीं होगी।' मैंने खेजरोली शाखा में कार्यभार संभाला।

आपातकाल समाप्त हुआ। नयी सरकार के गठन के बाद एक मीटिंग के दौरान श्री सिरोडकर ने विनोद करते हुए कहा– 'श्याम लाल आपके उत्तर '' Sir, there is no probation period in R.S.S.'' से तो आप जेल गये होते'।

मैंने भी विनोदी लहजे में उत्तर दिया– 'सर! यदि ऐसा होता तो आज इस सरकार का एक मंत्री आपकी सेवा में खड़ा होता।'

– श्यामलाल शर्मा, *मालवीय नगर, जयपुर*

'नाक काटी रानी' महारानी कर्णावती

पहाड़ी इलाका,तंग रास्ते और फिर गढ़वाली सैनिकों की वीरता के आगे वे हार गये, मार खा गये। रानी ने उस फौज के सेनापति से लेकर सैनिकों तक की नाकें कटवा दीं। तभी से उसे 'नाक काटी रानी' कहा जाने लगा था।

कौन थी वह महारानी, जिसे 'नाक काटी रानी' कहा जाता है?

किस राजा का सेनापति और सैनिक थे, जिन्हें अपनी नाकें कटवा कर प्राणों की भीख मिली। निश्चय ही यह इतिहास का एक अनोखा प्रसंग है।

वह रानी थी, गढ़वाल के महाराज महीपत शाह की विधवा पत्नी रानी कर्णावती, जिसने मुगल शाहजहाँ को नाकों चने चबवा दिये, किन्तु गढ़वाल की सीमा में विदेशियों को नहीं घुसने दिया।

गढ़वाल के पँवार वंशीय राजा कनकपाल के वंश में कनकपाल से छियालीसवीं पीढ़ी के राजा थे- महीपतशाह, जो महाराज शामशाह के पुत्र थे। उन्हीं की महारानी थीं कर्णावती।

महीपत शाह वीर, सुयोग्य और बड़ा सूझबूझ वाला राजा था। उसे 'गर्व भंजक' भी कहा जाता था। उस वीर ने अपने शत्रुओं की शेखी झाड़ दी थी। अपने शत्रुओं का घमण्ड चूर-चूर कर दिया था। तिब्बती राजा उनसे बहुत भयभीत रहते थे। उसी राजा के अमात्य थे माधो सिंह भण्डारी जिसकी वीरता की प्रसिद्धि आज भी जन-जन में व्याप्त है।

महीपत शाह ने सन् १६४२ ई. तक मात्र १७ वर्ष गढ़वाल पर शासन किया। मृत्यु के समय महीपत शाह का एक मात्र पुत्र पृथ्वीपति शाह केवल ७ वर्ष का अबोध बालक था। कैसे चलाता वह राज्य? किस प्रकार सिर उठाने वाले शत्रुओं को मात देता? गढ़वाल के इतिहास में यह अजीब समस्या आ गई थी। महारानी कर्णावती इस समस्या का समाधान खोजने लगीं। अन्त में समस्या का समाधान उन्होंने ढूंढ ही निकाला, क्योंकि वे वीर-पत्नी के साथ-साथ स्वयं भी वीरांगना थीं। पिता महीपत शाह की मृत्यु के बाद उनके सात वर्षीय पुत्र पृथ्वीसिंह शाह को सन् १६४२ ई. में राजगद्दी पर बिठाया गया। इतनी छोटी आयु का राजा इतिहास में शायद ही पहले कभी राजगद्दी पर बैठा हो।

तिब्बत की ओर से तो अब राज्य में आक्रमणों की सम्भावना नहीं थीं, किन्तु देहरादून की ओर से लुटेरे तथा विदेशी आक्रमण कारी अभी भी आ जा रहे थे। रानी कर्णावती ने अब उस ओर विशेष ध्यान देना शुरु कर दिया। वह राज्य की जनता को पूर्ण सुरक्षा और शान्ति देने में जुट गई। वास्तव में अपने पुत्र को गद्दी पर बैठाकर राज्य की समुचित व्यवस्था करने के लिए उसने शासन की बागडोर स्वयं अपने हाथों में ही ले ली थी।

उन दिनों दिल्ली के सिंहासन पर मुगल बादशाह शाहजहाँ बैठा था। अपनी बादशाहत के विस्तार के लिए उसने अपनी पूरी ताकत लगा दी थी। अतः उसने भारत की उत्तरी सीमा गढ़वाल पर भी अपनी आंख गड़ा दी। उसकी सेना का एक सेनापति था नजाकत खाँ जो राज्य विस्तार के लिए कमर कसे हुए था।

बादशाह शाहजहाँ ने उसके सेनापतित्व में एक बड़ी सेना गढ़वाल पर विजय प्राप्त करने के लिये रवाना कर दी, जिसमें पैदल सिपाहियों के अतिरिक्त तीस हजार घुड़सवार सैनिक भी थे। यद्यपि सेनापति नजाकत खाँ बड़ा सावधान था, उसके सैनिकों के हौसले बढ़े हुए थे, किन्तु उन्हें क्या पता था, पर्वतीय मार्ग का, पर्वत की चढ़ाइयों तथा ढालों का? उन्हें क्या पता था, पहाड़ी वीरों तथा वीरांगनाओं का? उन्हें क्या पता था, भविष्य में होने वाली अप्रत्याशित पराजय का? वे बढ़ते ही गये। उधर गढ़वाली सैनिक आये हुए शत्रु को दुबारा कभी गढ़वाल की पवित्र धरती पर पांव न रखने का सबक सिखाने के लिए पहले से ही तैयार बैठे थे।

फिर क्या था, दोनों सेनायें आमने-सामने हो गयीं। सैनिक तथा सेनापति विजय की कामना से परस्पर भिड़ने लगे। राजमाता कर्णावती को अपने क्षेत्र की स्थिति का पूरा ज्ञान था। उन्हें यह भी ज्ञान था कि बाहर से आया हुआ शत्रु कितनी शक्ति बटोर सकता है। परिणाम स्वरूप ज्यों-ज्यों मुगल सेना पहाड़ी सकरे रास्तों से आगे बढ़ती गई, गढ़वाली सेना वैसे ही पीछे हटती गई। मुगल सेना को पहाड़ियों में घुसने दिया गया। जब शाहजहाँ के सैनिक एक निश्चित स्थान पर आ गये, तब उनके चारों तरफ के मार्गों को बन्द कर दिया गया ताकि न वे आगे और न ही पीछे जा सकें।

मुगल सेना को इस अप्रत्याशित संकट का अंदाज नहीं था। सेना वहीं की वहीं रह गई। कुछ दिनों में उनकी भोजन सामग्री भी समाप्त होने लगी। 'बुभुक्षितं किं न करोति पापम्' सिद्धान्त के आधार पर मुगल सेनापति ने सोचा कि राज्य विस्तार तो हो चुका, अब प्राण रक्षा करनी चाहिए।

उसने महारानी कर्णावती के पास शान्ति सन्धि का प्रस्ताव भेजा। राजमाता ने उत्तर दिया कि अब तो पर्याप्त विलम्ब हो चुका है। मुगल सरदार फिर गिड़गिड़ाया और प्राणों की भीख माँगी।

महारानी उन्हें जीवनदान देने के लिए तो सहमत हो गई किन्तु उसने कहा कि वह यादगार में मुगल सैनिकों की नाकें रख लेंगी। मरता क्या न करता, शाहजहाँ के सैनिक अपनी जान गवांने की अपेक्षा अपनी नाकें काटने को तैयार हो गये। उन्होंने अपने हथियार वहीं फेंक दिये जहाँ वे खड़े थे और अपनी नाकें काट कर वहीं छोड़ दीं।

शाहजहाँ ने शर्म के कारण गढ़वाल के विरुद्ध कभी दुबारा युद्ध का प्रयास नहीं किया। इस घटना के उपरान्त रानी कर्णावती नाक काटने वाली रानी या 'नाक काटी रानी' के नाम से विख्यात हो गईं।

-डॉ.विजय कुमार शुक्ल

महादेव मन्दिर जो नौ महीने लुप्त रहता है

अपने देश में भगवान शिव शंकर का एक ऐसा मन्दिर भी है जो साल में नौ महीने लुप्त रहता है और अप्रेल, मई,जून माह में ही दिखाई देता है। यह मन्दिर हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले में है, स्थानीय बोली में जिसका नाम **'बाथू की लड़ी'** है।

मान्यता है कि यह मन्दिर पाण्डवों ने अपने वनवास काल में बनवाया था। मन्दिर में पाण्डवों ने विशाल शिवलिंग स्थापित किया जिस पर डूबते सूर्य की किरणें पड़ती थीं। पाण्डवों ने यह मन्दिर एक रात में बनाया। योगेश्वर श्रीकृष्ण की कृपा से वह एक रात छह महीने की हो गई और इसीलिये माना जाता है कि यह मन्दिर श्रीकृष्ण की शक्तियों से बँधा हुआ है। मन्दिर के बाहर पाण्डवों ने स्वर्ग जाने के लिये सीढ़ियाँ भी बनवाईं थी। ये सीढ़ियाँ एक मीनार जैसे भवन में बनी हैं। इस मीनार में इस समय गोलाकार सौ सीढ़ियाँ हैं।

स्वर्ग की सीढ़ी

इस ऐतिहासिक मन्दिर पर इस्लामी हमलावरों का आक्रमण भी हुआ। वे इसे ध्वस्त नहीं कर पाये तो शिवलिंग पर पड़ने वाली सूर्य किरणों को रोकने की कोशिश उन्होंने की। इसके लिए उन्होंने मन्दिर के सामने कई गुम्बद बना दिये।

१९७० में पोंग बांध बनने पर यह मन्दिर बांध के जलाशय के क्षेत्र में आ गया और डूब गया। श्रद्धालुओं ने इसके पहले पाण्डवों के स्थापित किये शिवलिंग को वहाँ से हटा लिया। अब जब अप्रेल में जलाशय में पानी कम हो जाता है तो मन्दिर प्रकट हो जाता है और तीन महीनों तक यहाँ श्रद्धालुओं की भीड़ लगी रहती है। तीन महीनों के लिये जब महादेव मन्दिर प्रकट होने लगा तो वहाँ एक छोटे शिवलिंग की स्थापना कर दी गई।

इस मन्दिर की आश्चर्यजनक बात यह है कि लगभग पचास वर्षों से यह साल में नौ महीने पानी में डूबा रहता है फिर भी ये कहीं से भी खण्डित नहीं हुआ है। **इतने लम्बे समय तक पानी में रहने के बाद भी इस पर 'काई' कहीं नहीं जमती।** दस-पन्द्रह दिनों में ही पानी में डूबी वस्तु पर काई जमने लगती हैं, पर इस बाथू की लड़ी के भीतर-बाहर कहीं कोई काई नहीं लगती। जुलाई से मार्च के नौ महीनों में मन्दिर की स्वर्ग की सीढ़ियों की केवल छत पानी से बाहर दिखाई देती है।

भीम की गुलेल- बाथू की लड़ी से तीन कि.मी. की दूरी पर एक काला पत्थर रखा है। इसकी भी श्रद्धा से पूजा की जाती है। स्थानीय लोग बताते हैं कि मन्दिर निर्माण में बाधा उत्पन्न करने वाले राक्षसों को भगाने के लिये भीम ने अपने गुलेल से उन पर पत्थर फैंके थे। उन पत्थरों में से ही यह पत्थर तीन कि.मी. की दूरी पर गिरा। पहले यह खुले में था, अब इस पर छत डाल कर पूजा स्थल का रूप दे दिया गया है। देखने से लगता है कि पत्थर किसी उल्का-पिण्ड का टुकड़ा रहा होगा। पृथ्वी पर गिरने के साथ यह तनिक भीतर धँस गया।

यह मन्दिर भी भारत की उत्कृष्ट भवन निर्माण कला का एक उदाहरण है। ❑

उत्तर देश और संस्कृति - विभीषण, शिखण्डी , मैक्सिको, चार, कठोपनिषद, महमूद गजनवी, उत्कृष्ट लोहा, भगिनि निवेदिता, महाराजा कान्हड़देव, त्यागराज।

पेरु (दक्षिण अमरीका) में २१ जून को सूर्य की उपासना करते श्रद्धालु। २१ जून को सबसे बड़ा दिन होता है और इसी दिन पूरे दक्षिण अमरीका में सूर्य उत्सव मनाया जाता है। पेरु में इस उत्सव का नाम 'इन्ती रयामी' है।

एक जुलाई को जी.एस.टी. (वस्तु एवं सेवा कर) लागू होने पर प्रसिद्ध शिल्पकार पद्मश्री सुदर्शन पटनायक ने समुद्र किनारे मिट्टी से शिल्प बनाकर इस नये कानून का इस प्रकार स्वागत किया।

प्राचीनकाल के विश्व प्रसिद्ध पशु - चिकित्सक शालिहोत्र

भारत के प्राचीन चिकित्सा विज्ञानियों में शालिहोत्र का नाम भी खासा जाना-पहचाना है। शालिहोत्र की खासियत यह थी कि वे अपने समय के जाने-माने पशु-चिकित्सक थे। खासकर घोड़ों और उनके रोगों के बारे में उनकी जानकारी इतनी विलक्षण और संपूर्ण है कि आज भी दुनिया भर में शालिहोत्र के ग्रंथ का बड़े सम्मान से उल्लेख किया जाता है। यह बात आज विचित्र लग सकती है पर सच यह है कि आज की तुलना में प्राचीन काल में पशुओं की चिकित्सा के बारे में हमारी जानकारी कहीं अधिक विकसित थी। शायद इसीलिए ही घोड़े-हाथी हों या दूसरे पशु वे मनुष्य के लिये उपयोगी तो थे ही, साथ ही मनुष्य का उनके साथ एक किस्म का रागात्मक संबंध भी था। आज मशीनी युग में यह संबंध बिगड़ गया है।

शालिहोत्र के जीवन के बारे में आज हमारे पास अधिक जानकारी नहीं है। कहा जाता है कि वे एक ब्राह्मण मुनि हयघोष के पुत्र थे और श्रावस्ती में रहते थे। वे सुश्रुत और अग्निवेश के समकालीन कहे जाते हैं। इस लिहाज से शालिहोत्र ईसा-पूर्व आठवीं शताब्दी में यानी आज से कोई २८०० वर्ष पूर्व हुए। शालिहोत्र का घोड़ों के संबंध में ज्ञान इतना अपूर्व था कि दूर-दूर तक उनकी ख्याति फैल गई थी। घोड़ों के रोगों और उन्हें स्वस्थ रखने के तौर-तरीकों का विस्तृत वर्णन उन्होंने अपनी पुस्तक 'हय आयुर्वेद' में किया है। इस पुस्तक की इतनी ख्याति हुई कि देखते शालिहोत्र का नाम भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक छा गया। यहां तक कि विदेशों में भी उनका नाम और कीर्ति पहुँची।

उनके ग्रंथ **'हय आयुर्वेद'** को 'तरंग्म शास्त्र' या 'शालिहोत्र संहिता' भी कहा जाता है। इस विशाल ग्रंथ में १२०० श्लोक हैं जिनमें घोड़ों की जाति-प्रजातियां, नस्ल, उम्र आदि का वर्णन है तथा घोड़ों को स्वस्थ बनाने तथा बेलगाम घोड़ों को साधने के तौर-तरीकों के बारे में रोचक ढ़ंग से बताया गया है। घोड़ा खरीदते समय क्या-क्या सावधानियां बरतनी चाहिए तथा किन-किन चीजों का खास ध्यान रखना चाहिए, इसके बारे में भी शालिहोत्र एक अनुभवी पथ-प्रदर्शक की तरह हमें काम की बातें बताते चलते हैं। इस लिहाज से शालिहोत्र का ग्रंथ 'हय आयुर्वेद' भारतीय संस्कृति और चिकित्सा-जगत में एक अलग स्थान रखता है। भारत में वैज्ञानिक दृष्टि कितनी विकसित थी, इसका यह एक उदाहरण है। यह कोई कम गौरव की बात नहीं है कि रचना के कोई २८०० वर्ष बाद भी यह घोड़े की चिकित्सा के बारे में एक आदर्श या प्रामाणिक ग्रंथ माना जाता है। फारसी, अरबी तथा अंग्रेजी भाषा में इसका अनुवाद हो चुका है। समय के साथ-साथ शालिहोत्र की कीर्ति बढ़ती ही जाती है। शालिहोत्र के अध्ययन की गहराई और पूर्णता का इस ग्रन्थ से पता चलता है। ❑

(साभार : पंजाब केसरी)

पुरी में जगन्नाथ यात्रा जब प्रारम्भ हुई उसी समय साइबेरिया में घूमने गये यात्रियों ने -२३° तापमान पर बर्फ से जगन्नाथ, सुभद्रा और बलभद्र की झाँकी बनाई और उनका पूजन भी किया।

श्रद्धांजलि

संघ के वरिष्ठ प्रचारक विद्याधर पालीवाल नहीं रहे

'गुरु' गुरु पूर्णिमा को पंचतत्व में विलीन हो गये

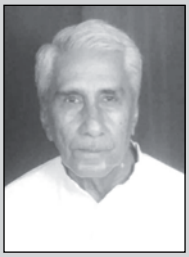

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ प्रचारक एवं देश के प्रथम सीमा जागरण संगठन ''सीमाजन कल्याण समिति राजस्थान'' के संस्थापक संगठन मंत्री रहे श्री विद्याधर पालीवाल, जिन्हें कार्यकर्ता आदर से 'गुरु' कहकर संबोधित किया करते थे, का गत ८ जुलाई को निधन हो गया। वे ८५ वर्ष के थे। पिछले एक वर्ष से अपने गॉव 'गूंगा' (जिला बाड़मेर) में अपने भतीजे के साथ रह रहे थे।

६ जुलाई को रात्रि में उन्हें हृदय में शूल अनुभव हुआ। दूसरे दिन प्रात: जैसलमेर जिला मुख्यालय के राजकीय चिकित्सालय में उन्हें चिकित्सा हेतु भर्ती करवाया गया। चिकित्सकों ने बहुत परिश्रम किया किन्तु ८ जुलाई को सायं ७:४५ बजे उन्होंने अन्तिम सांस ली। पंचांग के अनुसार उस समय गुरु पूर्णिमा लग चुकी थी।

गुरु का प्रचारक जीवन १९६३ में आरम्भ हुआ। जालौर जिले के आहोर नगर से प्रचारक जीवन यात्रा आरम्भ हुई। फिर जालौर, सिरोही, पाली, जोधपुर स्थानों पर जिला प्रचारक रहे। कितने ही कार्यकर्ताओं का जीवन उन्होंने राष्ट्र सेवा से जोड़ दिया।

पाथेय-कण की ओर से उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित है।

सरदार पटेल ने सत्तर साल पहले चेता दिया था

चीन की कुदृष्टि असम के महत्वपूर्ण हिस्सों पर है

पिछले दिनों चीन ने भारत को यह कह कर धमकाया, कि १९६२ की हार को भारत को याद रखना चाहिये। वास्तव में चीनी अजगर को भी भारत ने ही पाला-पोसा है। हमने 'पंचशील' का आत्मघाती सिद्धान्त दिया और चीन को तिब्बत पर अधिकार करने दिया। उस समय भी सरदार वल्लभ भाई पटेल चीन की वास्तविकता जानते समझते थे। ७ नवम्बर १९५० को उन्होंने तत्कालीन प्रधानमंत्री को एक पत्र लिख कर चीन के मंसूबों के बारे में चेतावनी दी थी। वह पत्र प्रस्तुत है-

मेरे प्रिय जवाहरलाल,

चीन सरकार ने हमें अपने शांतिपूर्ण उद्देश्यों के आडंबर में उलझाने का प्रयास किया है। मेरा यह मानना है कि वे हमारे राजदूत के मन में यह झूठा विश्वास कायम करने में सफल रहे कि चीन तिब्बत की समस्या को शांतिपूर्ण ढंग से सुलझाना चाहता है। चीन की अंतिम चाल, मेरे विचार से कपट और विश्वासघात जैसी ही है।

पिछले कई महीनों से रूसी गुट से परे हम ही केवल अकेले थे, जिन्होंने चीन को संयुक्त राष्ट्र की सदस्यता दिलवाने की कोशिश की तथा फारमोसा के प्रश्न पर अमरीका से कुछ न करने का आश्वासन भी लिया। मुझे इसमें संदेह है कि चीन को अपनी सदिच्छाओं, मैत्रीपूर्ण उद्देश्यों और निष्कपट भावनाओं के बारे में बताने के लिए हम जितना कुछ कर चुके हैं, उसमें आगे भी कुछ किया जा सकता है। हमें भेजा गया उनका अंतिम टेलिग्राम की भाषा साफ बताती है, कि यह किसी दोस्त की नहीं बल्कि भावी शत्रु की भाषा है। चीन की कुदृष्टि हमारी तरफ वाले हिमालयी इलाकों तक ही सीमित नहीं है, वह असम के कुछ महत्वपूर्ण हिस्सों पर भी नजर गड़ाए हुए है। बर्मा पर भी उसकी नजर है। मेरे विचार से हमारे मन में यह स्पष्ट धारणा होनी चाहिए कि हमें क्या प्राप्त करना है और किन साधनों से प्राप्त करना है।

इन खतरों के अलावा हमें गंभीर आतंरिक संकटों का भी सामना करना पड़ सकता है। मैंने (एचवीआर) आयंगर को पहले ही कह दिया है कि वह इन मामलों की गुप्तचर रिपोर्टों की एक प्रति विदेश मंत्रालय को भेज दें। कुछ समस्याओं का उल्लेख कर रहा हूँ जिनका मेरे विचार में तत्काल समाधान करना होगा और जिन्हें दृष्टिगत रखते हुए ही हमें अपनी प्रशासनिक या सैन्य नीतियां बनानी होंगी तथा उन्हें लागू करने का उपाय करना होगा।

आपका,

वल्लभ भाई पटेल

एक विदेशी ने समझा परिवार का महत्व

जेसिका साइमन

अपने देश की परिवार-व्यवस्था हमारे समाज और राष्ट्र-जीवन का आधार है। इसे नष्ट करने का पूरा प्रयास पंचगामी तत्व कर रहे हैं। हमारी कुटुम्ब-व्यवस्था यदि ढह गयी तो राष्ट्र-जीवन पर संकट आ जायेगा। हमें परिवार-प्रणाली का महत्व समझ में नहीं आता, लेकिन विदेशी इसे देख कर चमत्कृत हो जाते हैं। पिछले दिनों लेबनान मूल की अमरीकी जेसिका साइमन भारत-यात्रा पर आईं थी। उन्होंने भारतीय समाज व्यवस्था पर जो टिप्पणी की वह दैनिक राजस्थान पत्रिका (१९ मई) में प्रकाशित हुई। उक्त टिप्पणी के कुछ अंश इस प्रकार हैं-

कुछ समय पहले की बात है, मैं घूमने के मकसद से भारत आई थी। घूमने के पीछे मेरा कोई तयशुदा एजेंडा नहीं था, इसके सिवाय कि प्रेम, रिश्ता, खुलापन, त्याग को भारतीय नजरिए से जांनू। लेकिन इस टूर ने प्यार और रिश्तों के बारे में मेरा नजरिया बदल कर रख दिया।

एक महीने के सफर में कुछ बातें अच्छी लगीं। इनमें पहली बात ये है कि भारतीय पति केवल पत्नी का नहीं होता। उस पर उसके परिवार का हक होता है। उसकी चिंता में घर के सभी सदस्य शामिल होते हैं। फिर हर काम में पत्नी की सहमति हो ये भी जरूरी नहीं। सबसे बड़ी बात ये कि लोगों को इसमें कुछ भी अटपटा नहीं लगता। इसी तरह विवाह भारत में निजी मामला नहीं होता। यहां पर जब लोग विवाह करते हैं तो दो परिवार भी जुड़ते हैं।

मुझे एक समय अजीब लगा जब एक भारतीय दोस्त ने टूर के दौरान कहा कि जब मैं अपनी पत्नी से तंग आता हूँ तो सास-ससुर मुझे मना लेते हैं। मेरा गुस्सा भी कुछ देर में शांत हो जाता है। असहमति सिर्फ पति-पत्नी का मसला न होकर पूरे परिवार का मसला हो जाता है। अधिकतर भारतीय अरेंज्ड (परिवार की सहमति से) मैरिज पसंद करते हैं। विमान में मुंबई की एक प्रोफेशनल लड़की ने शादी किससे करनी चाहिए के जवाब में बताया, कि सभी काम खुद नहीं करने चाहिए। कुछ मां-बाप के लिए छोड़ देने चाहिए।

ऋषिकेश में एक वृद्ध युगल से जब मैंने पूछा कि लव मैरिज अच्छी है या अरेंज (घर वालों द्वारा तय) तो उन्होंने कहा कि अरेंज। इस बात पर मुझे हँसी आई। इस पर उन्होंने बताया कि ये रिश्ते टूटते नहीं। जब मेरा बेटा लंदन पढ़ने चला गया तो हम दोनों के बीच प्यार पहले से ज्यादा बढ़ गया। मेरी पत्नी दुनिया की सबसे बेहतरीन औरत है। हम दोनों में दिव्य प्रेम है।

भारत विरोधी लोग दुरुपयोग कर रहे हैं ट्विटर का

फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्स-अप आदि तेजी से लोकप्रिय हो रहे सोशल मीडिया के हिस्से हैं। इन पर लोग अपना मत प्रकट करते हैं तथा अन्य उस पर अपनी टिप्पणी करते हैं। आम-जन क्या सोच रहे हैं इसको जानने का फेसबुक आदि अच्छे माध्यम हैं। उक्त सभी माध्यमों के मुख्यालय अमरीका या यूरोप में हैं। इन माध्यमों और विशेष कर ट्विटर पर आरोप है कि यह भारत विरोधियों को बढ़ावा दे रहा है। यह आरोप फिल्मी दुनिया के प्रसिद्ध गायक अभिजीत सेन का है, जिनकी सदस्यता **ट्विटर** ने पिछले दिनों समाप्त कर दी थी। इसके विरोध में एक और गायक सोनू निगम ने खुद ही ट्विटर की सदस्यता छोड़ दी।

अभिजीत सेन को किसी टिप्पणी का बहाना बना कर ट्विटर का उनका खाता बन्द कर दिया गया। इस पर एक साक्षात्कार (पांचजन्य, १८ जून) में श्री अभिजीत ने कहा, कि *''ट्विटर के संचालक भारत विरोधियों को बढ़ावा दे रहे हैं और जवाहर लाल नेहरू विवि गैंग का समर्थन कर रहे हैं।''* उन्होंने आगे कहा कि लोग हमें गाली दे रहे हैं उनके विरूद्ध तो यह कुछ कर नहीं रहा है और मेरे, परेश रावल, सोनू निगम जैसे लोगों के संदेशों पर निगरानी रख रहा है।

ज्ञात हो कि लगभग दो महीने पहले सोनू निगम ने इस माध्यम (ट्विटर) पर लिखा था कि हर सुबह मस्जिदों के माइक से आने वाली 'अजान' की आवाज से उनकी नींद खराब हो जाती है। गुजरात के सांसद जाने माने अभिनेता परेश रावल ने भी सलाह दी थी कि लेखिका सुजाना अरूंधति रॉय को जीप के सामने बाँध कर घाटी में घुमाया जाये। बताया जाता है कि उक्त लेखिका ने पिछले दिनों कश्मीर के आतंकियों का समर्थन करते हुए भारत की सेना को भला-बुरा कहा था।

विहिप की केन्द्रीय समिति की बैठक गुजरात में सम्पन्न

गत २४-२५ जून को वडताल (गुजरात) में विश्व हिन्दू परिषद की केन्द्रीय प्रबंध समिति की बैठक हुई। यह बैठक स्थानीय श्रीस्वामिनारायण मंदिर के परिसर में रखी गई थी। संगठन कार्यों की समीक्षा कर आगामी योजना बनाने के साथ दो प्रस्ताव भी इस बैठक में पारित किये गये। प्रस्ताव इस प्रकार हैं -

(१) राम मंदिर व गोवंश रक्षा के लिए केन्द्रीय सरकार अविलम्ब कानून लाये- प्रबंध समिति ने इस प्रस्ताव में पुरजोर माँग की कि संसद में अविलम्ब कानून लाकर सरकार राम मंदिर की दिशा में सार्थक कदम उठाये।

गोवंश की रक्षा पर समिति ने कहा कि गोरक्षकों को अपमानित करने का षड़यंत्र दुर्भाग्यपूर्ण है। गोरक्षक सम्मान के पात्र हैं। गोरक्षकों का अपमान और गोहत्यारों का सम्मान हिन्दू समाज सहन नहीं करेगा।

(२)अलगाववाद को बढ़ावा देने वाले अल्पसंख्यक आयोग व अल्पसंख्यक मंत्रालय को समाप्त किया जाये-

केन्द्रीय समिति ने प्रश्न उठाया कि क्या देश के सभी नागरिकों के अधिकारों की रक्षा के लिए मानवाधिकार आयोग पर्याप्त नहीं है? इसलिये विश्व हिन्दू परिषद की मांग है कि अल्पसंख्यक आयोग तथा अल्पसंख्यक मंत्रालय को अविलम्ब समाप्त कर देना चाहिये।

बारा बस्सी के पठान गाय और गंगा की पूजा करते हैं

उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले की स्याना तहसील में गंगा के किनारे बारह गाँव हैं जिनमें पठान रहते हैं। इसी कारण इस क्षेत्र का नाम बारा बस्सी पड़ गया। यहाँ के पठान आज भी गाय और गंगा पर पूरी श्रद्धा रखते हैं और इनकी पूजा करते हैं। इन गाँवों के अधिकतर पठान परिवारों ने गोशालाएं बना रखी हैं। जिनमें बूढ़ी और बीमार गायों की भी सेवा की जाती है। बारा-बस्सी के गाँवों में एक चन्दियाना भी है। यहाँ के बब्बन मियाँ गोपालन के साथ एक डेयरी भी चलाते हैं जिसमें देशी गायों का शुद्ध दूध मिलता है।

बब्बन मियाँ का पूरा नाम जुबेदुर्रहमान है। उनकी गोशाला का नाम भी श्रीकृष्ण के ऊपर **मधुसूदन गोशाला** रखा गया है। पांचजन्य साप्ता.(१८ जून) में प्रकाशित एक रपट के अनुसार बब्बन मियाँ गरीब व जरूरतमंदों को अपनी डेयरी का दूध निःशुल्क ही देते हैं।

भारत के इतिहास के अनुसार बारा बस्सी के पठानों ने पहले शेरशाह सूरी और बाद में हेमू की सहायता की थी। हेमू ने बाद में अकबर को हराया और हेमचन्द्र विक्रमादित्य के नाम से दिल्ली का सम्राट बना। पठानों ने हेमचन्द्र की भरपूर सहायता की थी। हेमू की पराजय के बाद बारा बस्सी के पठान मेवाड़ चले गये और महाराणा की सेना में भर्ती हो गये। उनमें से एक योद्धा हकीम खाँ सूर प्रताप का सेना नायक था, जिसने हल्दीघाटी के युद्ध में वीरगति पाई।

इक्कीसवीं सिन्धु दर्शन यात्रा सम्पन्न

भारत के सुदूर उत्तर में चीन-पाकिस्तान सीमा पर स्थित लेह में पवित्र सिन्धु नदी तिब्बत से भारत में प्रवेश करती है। यहाँ पिछले २० बीस वर्षो से प्रतिवर्ष 'सिन्धु दर्शन उत्सव' मनाया जा रहा है। इस उत्सव में देशभर के लोग शामिल होते हैं। इस वर्ष २१वां सिन्धु दर्शन उत्सव २३ से २६ जून तक लेह में पवित्र सिन्धु नदी के तट पर सम्पन्न हुआ। इस बार राजस्थान से २८१ यात्रियों ने सिन्धु दर्शन कर सौभाग्य प्राप्त किया। देशभर से डेढ़ हजार से अधिक देशप्रेमियों ने इसमें भागीदारी की।

उत्सव के पहले दिन २३ जून को लेह में स्थित 'सिन्धु भवन' में स्वागत का कार्यक्रम रखा गया। इस दौरान मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ तथा गुजरात के कलाकारों व स्कूल के बच्चों ने मंचीय कार्यक्रम प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के माध्यम से 'सारा भारत-एक भारत' का संदेश भी दिया गया। २४ जून को पवित्र सिन्धु नदी का पूजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता सिन्धु सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मुरलीधर माखीजा ने की। २६ जून को लेह के पोलो मैदान में सायंकाल रंगारंग कार्यक्रम के पश्चात् इस उत्सव का समापन हुआ।

देश के दुश्मनों को नायक बना रहा है सेकुलर मीडिया

समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, दूरदर्शन चैनलों, सोशल मीडिया पर सेकुलर-लिबरल-नक्सल गठजोड़ का कब्जा है। भारतीय भाषाओं के पत्र-पत्रिकाएं तथा जी-टीवी, इंडिया टीवी जैसे कुछ चैनल इसके अपवाद हैं। कुछ अंग्रेजी के पत्र-पत्रिकाएं तथा चैनल तो इतने सेकुलरवादी हैं कि देश के शत्रुओं की प्रशंसा तथा उन्हें नायक बनाने में ही वे अपनी वाह-वाही समझते हैं। खुले-आम राष्ट्र विरोध में इन्हें कोई संकोच नहीं होता।

सैय्यद सलाउद्दीन एक खूंखार आतंकी है और पाकिस्तान में रहता हैं। वर्ष २००८ में २६ नव. को मुम्बई पर हुए आतंकी हमले सहित कई आतंकी कार्रवाइयों का सूत्रधार यही दुर्दांत आतंकी था। हाल ही में अमरीका ने भी इसे 'ग्लोबल आतंकी' घोषित किया है। इसका गुण-गान करने वाला एक लेख साप्ताहिक पत्रिका **द वीक** (९जुलाई) में प्रकाशित हुआ है। यह साप्ताहिक कोच्चि (केरल) से प्रकाशित होता है तथा सेकुलर-लिबरल-नक्सल गठजोड़ का प्रबल समर्थक है। भारत और भारतीयता की कट्टर विरोधी बरखा दत्त ने यह लेख लिखा है। ये ज्ञानी पत्रकार इस आतंकी से मिलने रावलपिण्डी (पाकिस्तान) पहुँच गईं।

ये बरखा दत्त वहीं हैं जिन्होंने २१ वर्षों तक एन डी टीवी में काम किया और यूपीए सरकार में जिनकी तूती बोलती थी। इन्होंने जामिया मिलिया विवि में शिक्षा प्राप्त की। विकिपीडिया से प्राप्त जानकारी के अनुसार इनके तीन विवाह हुए और तीनों कश्मीरी मुसलमानों से हुए। दूसरे पति श्री मीर कश्मीर के अलगाववादियों से जुड़े थे। **द वीक** (पृष्ट ४५-४६) में प्रकाशित लेख में एक पोस्टर का फोटो भी है जिसमें लिखा है- सलाउद्दीन आतंकी नहीं बल्कि स्वतंत्रता सेनानी है। पत्रिका के इसी अंक के अंतिम पृष्ठ पर माननीया बरखा दत्त ने भारत में मुस्लिमों की घोर दयनीय हालत पर भी अश्रु बहाये हैं। उक्त साप्ताहिक पहले भी नक्सलियों, उत्तर-पूर्व के आतंकियों तथा म्यांमार के रोहिंग्या मुसलमानों को नायक बनाने वाली सामग्री प्रकाशित कर चुका है।

आतंकाधिकार या मानवाधिकार आयोग?

आतंकी को दस लाख और श्रद्धालुओं को कौड़ी भी नहीं

सेकुलर गठजोड़ के दुष्प्रभाव से मानवाधिकार की वकालत करने वाले सभी संगठन वास्तव में आतंकियों, नक्सलियों और देश के दुश्मनों के अधिकारों की रखवाली करने वाली संस्थायें बन गये हैं। इन्हें आतंकियों, नक्सलियों तथा दुश्मन देश के जासूसों के मानवाधिकारों की तो भारी चिन्ता रहती है किन्तु शहीद होने वाले सैनिकों, पीड़ित हिन्दुओं और आतंकियों के शिकार बने तीर्थ यात्रियों के मानवाधिकारों की कोई परवाह नहीं है। पत्थरबाजों और उपद्रवियों से मतदान अधिकारियों की सुरक्षा के लिये चार महीने पहले सेना के मेजर गोगोई ने एक आतंकी को जीप के बोनट पर बाँध दिया था। राज्य के मानवाधिकार आयोग को इससे बड़ी पीड़ा हुई। इसलिये उसी आतंकी फारुक डार को जम्मू-कश्मीर के मानवाधिकार आयोग ने दस लाख रु. देने का निर्णय दिया है। राज्य सरकार को कहा गया है कि जीप पर बाँधने से उक्त पत्थरबाज के अधिकारों का हनन हुआ है और इसलिये उसे क्षतिपूर्ति के रूप में दस लाख रुपये दिये जायें।

जिस दिन यह घोषणा की गई उसी दिन अमरनाथ यात्रियों की एक बस पर आतंकियों ने हमला कर दिया। ताबड़तोड़ बरसती गोलियों से सात श्रद्धालु मारे गये तथा लगभग दो दर्जन लोग घायल हुए। राज्य का मानवाधिकार आयोग बताये कि मृतक तीर्थयात्रियों के भी कुछ मानवाधिकार थे या नहीं? और यदि थे तो उनकी क्षतिपूर्ति की राशि कितनी होगी? अभी तक तो आयोग ने बलिदान हुए श्रद्धालुओं को एक कौड़ी भी नहीं दी है?

उत्तर बाल प्रश्नोत्तरी - १ (ब), २(अ) ३ (स) ४ (ब) ५(ब) ६(ब) ७(द) ८(ब) ९(अ) १०(स)

कर्नल पठानिया अभी भी सींखचों के पीछे हैं

देश की रक्षा में लिये सेना के जवानों की कभी-कभी कैसी दुर्दशा होती है यह कर्नल पठानिया के उदाहरण से समझा जा सकता है। वे जेल में हैं और उनके साथ मेजर उपेन्द्र, हवलदार देवेन्द्र, लांस नायक लखमी तथा अरुण भी आजीवन कारावास की सजा भुगत रहे हैं।

घटना ३० अप्रेल २०१० की है। कश्मीर के मच्छिल क्षेत्र में सोनापिंडी चौकी पर ये जवान तैनात थे। उन दिनों भी सेना पर आतंकियों के हमले हो रहे थे। कश्मीर के आतंकी जवानों को एक-एक कर मौत के घाट उतार रहे थे। तत्कालीन सरकार के आदेश से सेना के हाथ बँधे थे। कर्नल पठानिया मन मसोस कर रह जाते थे। ३० अप्रेल को उनसे अधिक सहन नहीं हुआ। उनके साथ उक्त अधिकारी और जवान भी हो गये। इन देशभक्तों ने आतंकी शहजाद, रियाज, मोहम्मद शफी को मौत के घाट उतार दिया।

सेकुलर-लिबरल-नक्सल गठजोड़ ने इस पर पूरे देश में शोर मचा दिया। सेकुलर मीडिया में 'निर्दोषों की हत्या' शीर्षक से प्रतिदिन समाचार आने लगे। तत्कालीन सरकार ने सेना को उक्त देशभक्त सैनिकों पर कार्रवाई करने के आदेश दे दिये। कश्मीर के रणवीर पीनल कोड (भारतीय कानून वहाँ लागू नहीं हैं) के अनुसार इन जवानों पर मुकदमा चला। अप्रेल २०१३ में कश्मीर के ही न्यायालय ने सभी को आजीवन कारावास की सजा सुना दी। तीन तिलंगों के गठजोड़ ने देशभक्त बहादुर जवानों को सींखचों के पीछे भेज दिया। आज भी सभी जवान सजा भुगत रहे हैं।

गाय बचेगी – विश्व बचेगा

अंक संदर्भ : १ जून २०१७

'भविष्य की औषधियों की खान हमारी गोमाता' लेख से यह सिद्ध हो गया है कि गो माता बचेगी तभी विश्व बचेगा। यह तभी संभव है जब हमारा समाज गोमाता को पूर्ण रूप से अंगीकार कर उस लालन-पालन करें।

***-श्रीमती विमलेश,** बांदीकुई (दौसा)*

आमुख कथा 'हमारी गोमाता' रोचक जानकारी युक्त एवं पठनीय है। आयुर्वेद में गो उत्पादों से बनी अनेक औषधियों का वर्णन मिलता है। गोमाता के पंचगव्य से ही अनेक बीमारियों का सफल इलाज हो सकता है।

***-रामअवतार मित्तल,** सवाईमाधोपुर*

इस अंक में दिये गये लेख से यह गाय के प्रति जागरुकता भी बढ़ी। गाय केवल दुधारू पशु ही नहीं अपितु जीवनदाता भी है। अतः गोपालन के महत्व को अधिक से अधिक प्रचारित और प्रसारित करने की आवश्यकता है।

***-ओम हरित,** फागी*

'औषधियों की अक्षय खान है हमारी गोमाता' लेख बहुत अच्छा लगा। गोमाता की उपयोगिता सिद्ध हो जाने के बाद भी देशभर में गायें कटना दुर्भाग्यपूर्ण है।

***-गौरव शर्मा,** पाली*

गाय के दूध, दही, घी, गोबर एवं गोमूत्र का हमारे दैनिक जीवन में बहुत उपयोग है। राष्ट्र और समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले गोवंश की रक्षा करना हमारा नैतिक दायित्व है।

***-गोपाल सैकड़ा,** दौसा*

गाय भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्था एवं खेती का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। यह हमारी संस्कृति का मूलाधार भी रही है। अतः नेपाल की तरह भारत में भी गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाना आज की जरूरत है।

***-देवकीनन्दन शर्मा,** भगेगा (सीकर)*

गोवंश की महिमा के साथ ही इसके दूध, दही,घी, गोमूत्र आदि के उपयोग एवं बीमारियों में लाभ, गाय की महत्ता तथा आवश्यकता के साथ-साथ कई नई जानकारियाँ इस अंक से प्राप्त हुई।

***-कमलेश अग्रवाल,** धोला (जयपुर)*

गोवंश की उपयोगिता को स्पष्ट कर ही हम गोवंश को बढ़ा सकते हैं। केवल गो दुग्ध के ही उपयोग का संकल्प गोरक्षा की दिशा में महत्पूर्ण सिद्ध हो सकता है।

***-जितेन्द्र प्रजापत,** परबतसर (नागौर)*

गोमाता पर दी गयी जानकारी संग्रहणीय है। सभी भारतीयों के लिए गाय पूजनीय है तथा इसकी पूजा से विशिष्ट फल की प्राप्ति होती है। अतः गोसेवा भगवद् सेवा, समाज सेवा तथा राष्ट्र की सेवा है।

***-विजेन्द्र सिंघल,** मुरलीपुरा, जयपुर*

अंक में गोमाता पर दिया गया लेख ज्ञानवर्धक तथा गोवंश की नवीन जानकारी देने वाला है।

***-मदन सिंह सिंदल ,** सादड़ी (पाली)*

चरित्र निर्माण और बोधकथा

अंक में बोधकथा 'स्वावलम्बन की सीख' बहुत अच्छी लगी। प्रेरणादायक बोध कथाएं बच्चों के चरित्र निर्माण में बहुत सहायक होती हैं। छोटी-छोटी बाल कथाओं का प्रत्येक अंक में देने का आपसे आग्रह है।

***-श्रीमती पूनम शर्मा,** फलौदी*

मंत्रमुग्ध करने वाला गायन

'शिव ताण्डव स्तोत्र का मंत्रमुग्ध करने वाला गायन' पर अंक में विशेष रपट पढ़ी। फिल्मों में संस्कृत श्लोंको का बढ़ता प्रयोग भारतीय संस्कृति की विशेषता को स्पष्ट करता है। युवा पीढ़ी को भारतीय संस्कृति और सभ्यता से परिचित कराने के लिए ऐसी हिन्दी फिल्मों का अधिक से अधिक निर्माण होना चाहिये।

***-राकेश चौहान,** पीलवा (नागौर)*

वास्तविकता से परिचय

विचार स्तम्भ में प्रख्यात पत्रकार बलवीर पुंज का लेख प्रभावशाली और वास्तविकता से परिचय कराने वाला है। हिन्दू समाज को जाति के आधार पर बाँटने का षड़यंत्र पिछले सवा सौ साल से चल रहा है। जातिवाद और सम्प्रदायवाद देश व समाज के लिए अत्यंत घातक है। देशहित में सभी को मिलकर इसका पुरजोर विरोध करना चाहिये।

***-प्रभुसिंह राणावत,** साण्डेराव (पाली)*

ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी

पाथेय कण में पहली बार प्रश्नोत्तरी पढ़ने का मौका मिला। दोनों प्रश्नोत्तरियों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। प्रतियोगी परिक्षाओं की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों के लिए यह प्रश्नोत्तरी सामान्य ज्ञान बढ़ाने का एक अच्छा माध्यम है।

***-नितिन सोनेवाल,** छोटी सादड़ी, प्रतापगढ़*

बेटा! यह एक और चीन में बना माल है जो हमने भारत पर थोप दिया है

साभार : टाइम्स ऑफ इण्डिया